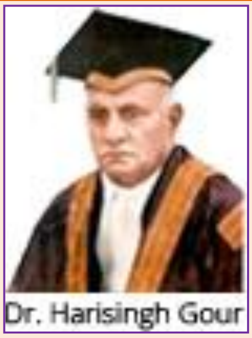

न्यूज़लेटर

जनवरी 2024

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

(केंद्रीय विश्वविद्यालय)

संरक्षक

प्रो. नीलिमा गुप्ता

कुलपति

डॉक्टर हरीसिंह गौर

विश्वविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सहयोग एवं परामर्श

डॉ. सत्यप्रकाश उपाध्याय

कुलसचिव (प्र.)

संपादक

डॉ. विवेक जायसवाल

जनसंपर्क अधिकारी (प्र.)

संपादक सदस्य

डॉ. हेमंत पाटीदार

डॉ. आशुतोष

डॉ. शालिनी चोइथरानी

डॉ. संजय शर्मा

माधव चंद्रा

क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले की 193 वीं जयंती पर ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित

भारत की पहली महिला अध्यापिका क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले जी की 193 वीं जन्म जयंती के अवसर पर डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के समाजविज्ञान शिक्षण अधिगम केंद्र द्वारा सावित्रिबाई फुले की प्रतिमा पर माल्यार्पण कार्यक्रम एवं राष्ट्रीय व्याख्यान श्रृंखला के तहत ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया. जिसका विषय “लड़कियों की शिक्षा: शिक्षा विमर्श में एक अचर्चित विषय” था. कार्यक्रम की मुख्य वक्ता शिक्षाविद व नारीवादी विमर्शकार प्रोफ़ेसर साधना सक्सेना ने अपने बीज वक्तव्य में बताया कि आज से करीब पौने दो सौ साल पहले तात्कालीन प्रचलित धारा के विरुद्ध जाकर सावित्रीबाई फुले द्वारा बालिका शिक्षा के क्षेत्र में किया गया कार्य नि:सन्देह सराहनीय है. वर्ष 2005 से 2007 के बीच मध्यप्रदेश में किये गए एक राज्यव्यापी, सूक्ष्म व जमीनी अनुभवों पर आधारित गुणात्मक अध्ययन के हवाले से उन्होंने लड़कियों की शिक्षा से जुड़े तमाम सरोकारों का एक चित्र प्रस्तुत किया. इस संदर्भ में उन्होंने बताया कि आदिवासी व दलित समाजों में लड़कियों की शिक्षा को लेकर माता और पिता के दृष्टिकोण में भिन्नता पाई गई, पुरुषों की अपेक्षा इन समाजों की महिलाओं में अपनी लड़कियों की शिक्षा को लेकर समर्थन अधिक देखने को मिला, लेकिन किसी भी समस्या के आते ही इन बालिकाओं की शिक्षा बीच में ही छूट जाने का ख़तरा भी लगातार बना रहा और अभी भी बना रहता है क्योंकि इनकी शिक्षा के मार्ग में कई अवरोध हैं जिनमें से छेड़खानी एक मुख्य अवरोध के रूप में हमारे सामने आता है यह न केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक ही सीमित है बल्कि शहरी इलाकों तक भी व्यापक है और इन दोनों ही जगहों घर से विद्यालय की दूरी इसका सबसे बड़ा कारण है जो उन बालिकाओं को हर क्षण असुरक्षा का अहसास कराता है जिसका असर लड़कियों में डर, पढ़ाई से ध्यान हटना एवं उनकी खराब शैक्षिक निष्पत्ति के तौर पर हमें देखने को मिलते हैं. प्रो. सक्सेना ने आगे बताया कि लड़कों या पुरुषों के व्यवहार का समाज द्वारा किया गया यह सामान्यीकरण कि ‘लड़के तो लड़के हैं वे तो ऐसा करेंगे ही तुम लड़कियों को बचकर चलना चाहिए’ लड़कियों के साथ हो रहे इस तरह के अनावश्यक और अप्रिय व्यवहार को बढ़ावा देने और उसका वैधीकरण करने का सबसे सशक्त साधन है जिसे बदलने की आवश्यकता है, क्योंकि इस तरह के अभ्यास

इतनी मजबूती के साथ लड़कियों पर ही दोषारोपण करते हैं कि वे खुद भी इस बात को स्वीकार कर बैठतीं हैं. सारी गलती उनकी ही है. यह एक बहुत ही विपरीतार्थक स्थिति है कि एक ओर तो लड़कियों को आगे बढ़ाना उनको पढ़ाना चाहते हैं और दूसरी इस तरह की सामाजिक जकड़नों को तोड़ने के बजाय संस्थागत समाजीकरण के जरिये उन्हें और अधिक मजबूत करते हैं जो बालिकाओं के आत्मविश्वास को लगातार कम करतीं हैं. अंत में उन्होंने इस बात की ओर ध्यान आकृष्ट किया कि नारीवादी विमर्श केवल महिलाओं से सम्बन्धित सरोकारों पर ही केन्द्रित नहीं होना चाहिए बल्कि इसमें पुरुषों के मनोभावों, उनकी अभिव्यक्तियों, कुंठाओं पर ही उतनी ही संवेदनशीलता और बारीकी से ध्यान दिया जाना चाहिए ताकि महिलाओं व पुरुषों के बीच एक सौहार्द्रपूर्ण रिश्ता बन सके जिकी नारीवादी विमर्श बात करता है.

कार्यक्रम की अंतिम बेला में शिक्षाशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर अनिल कुमार जैन ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रोफ़ेसर सक्सेना के वक्तव्य की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह के आयजन विद्यार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षकों और अंततः समाज को चिंतन की एक नवीन दिशा देते हैं और आज का यह आयोजन अपने इस मकसद में साफल कहा जा सकता है. प्रो. जैन ने आगे बताया कि महिला शिक्षा, महिला समानता और महिला सशक्तीकरण को हम शिक्षकों को एक अलग दृष्टिकोण से देखना होगा. और इस क्रम में हमें उनको जीवन जीने की, समाज में स्वयं को स्थापित करने की, आगे बढ़ने की, समाज की संस्कृति को समझने की, परिवार और समाज के बीच के रिश्ते की, और इससे भी ऊपर उठकर राष्ट्र के साथ परिवार और समाज के सम्बन्धों की शिक्षा देनी होगी. ताकि महिलाओं और पुरुषों को किसी विभेदात्मकरूप से नहीं बल्कि मानव के तौर एक समग्र व्यक्तित्व के रूप में समझा और स्वीकारा और समझा जा सकें.

कार्यक्रम के अंत में प्रोफेसर बी. के. श्रीवास्तव द्वारा औपचारिक आभार व्यक्त किया गया सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन डॉ. आफरीन खान ने किया. इसके अलावा कार्यक्रम में समाजविज्ञान शिक्षण अधिगम केन्द्र के समन्वयक डॉ. संजय शर्मा, विश्वविद्यालय के छत कल्याण अधिष्टाता एवं प्रख्यात दर्शनशास्त्री प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा, मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित रहें.

लेखांकन पेशा मनुष्य की जीवन शैली है

वाणिज्य विभाग डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में बी.कॉम एम.कॉम के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए लेखांकन पेशे के अंतर्गत करियर संभावनाओं पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया. उस सेमिनार के मुख्य वक्ता वाणिज्य विभाग के 1994–97 छात्र रहे वर्तमान का श्री रामजी नायक रहे. चार्टर्ड अकाउंटेंट प्रैक्टिशनर श्री रामजी नायक आज अपने धर्मपत्नी

सुश्री मानसी नायक के साथ पधारकर छात्रों को महत्वपूर्ण ज्ञान बिंदु प्रदान किए. श्री रामजी नायक ने बताया कि जीएसटी की कर दरों की अतिरिक्त बुलियन एवं गहनों पर 3% का जीएसटी निर्धारित किया गया. अपने आगे बताया कि भारत में विकसित वस्तुओं पर शेष की दर 12% से 160% तक है. अर्थात जिन वस्तुओं पर जीएसटी नहीं लगता उन पर सेस का निर्धारण किया जा सकता है। आपने अपने उद्बोधन में बताया कि मैन्युफैक्चरिंग इकाई पर आजीवन आयकर की दर 17.16 प्रतिशत निर्धारित की गई है. व्यक्तिगत करदाताओं की चर्चा करते हुए अपने स्पष्ट किया की नई एवं पुरानी कर व्यवस्था में नई कर व्यवस्था छोटे करदाताओं तथा उन वेतन भोगी करदाताओं के लिए लाभकारी है जो भविष्य के लिए विनियोग की क्षमता नहीं रखते. उनके कर दर में भी अंतर है. रामजी नायक ने बताया कि व्यक्तिगत वेतनभोगी करदाता न्यू कर प्रणाली से पुरानी कर प्रणाली में एवं पुरानी से नई कर प्रणाली में प्रतिवर्ष बदलाव कर सकते हैं, जबकि अन्य करदाता ऐसा नहीं कर सकते.

अन्य करदाता एक बार यदि कोई कर प्रणाली चुनते हैं तो उन्हें 5 वर्ष उसी स्कीम में रहना होगा. अतिथि वक्ता ने विद्यार्थियों को रोजगार के लिए प्रेरित करते हुए बताया कि बीकॉम छात्र जीएसटी एवं आयकर की प्रैक्टिस कर सकते हैं, अपील एवं अपीलीय प्राधिकरण में पक्षवार की ओर से उसका पक्ष रखने के लिए अर्हवारी मान्य है. अतिथि वक्ता ने बताया की ई-कॉमर्स एवं अन्य व्यावसायिक कर दरें समान है. विभाग अध्यक्ष प्रोफेसर जे.के. जैन ने कहा कि वाणिज्य विभाग के विद्यार्थी कभी बेरोजगार नहीं रहते. उन्होंने बताया कि वाणिज्य एक जीवन शैली विषय है, अतः प्रत्येक व्यक्ति वाणिज्य सुगमन करता है. विभाग के प्रोफेसर मानवेंद्र सिंह पाहवा ने बताया कि करियर के लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए समयबद्धता एवं अनुशासन महत्वपूर्ण वाहक है.

चार्टर्ड अकाउंटेंट रामजी नायक से छात्रों ने अनेक प्रश्न किए जिनमें उन्होंने संतोषजनक जवाब दिया तथा छात्रों को करियर के लिए वाणिज्य एवं लेखांकन चुनने पर बधाई दी. आपने अपनी सी.ए. की जीवन यात्रा पर ही प्रकाश डाला. कार्यक्रम के आरंभ में मां सरस्वती एवं डॉक्टर गौर के समक्ष दीप प्रज्वलन किया गया. कार्यक्रम का संचालन भव्यता एवं हर्षित जैन ने किया. मुख्य वक्ता का परिचय शोधार्थी हर्षित जैन ने किया. कार्यक्रम में लगभग 120 विद्यार्थी, शिक्षक डॉ. अनिता कुमारी, डॉ. सुषमा यादव, डॉ. पुष्पा सूर्यवंशी, प्रो. मनविंदर सिंह पाहवा एवं प्रो. जेके जैन, शोधार्थी लोकेंद्र, अदिति स्वामी, सुभाष गुप्ता, अंकित चौरसिया, गरिमा दोहर, पर्णवी निगानिया, सारांश कुमार श्रीवास्तव, पूजा ठाकुर, शिल्पा इक्का, महिमा हाबिल, गुरुदामन श्रीवास्तव आदि थे. धन्यवाद एमकॉम के विद्यार्थी संस्कार जैन ने ज्ञापित किया.

विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को राज्य स्तरीय युवा उत्सव में लोकगीत गायन में प्रदेश में प्रथम स्थान

नासिक में आयोजित राष्ट्रीय युवा उत्सव में टीम करेगी प्रतिभागिता

खेल एवं युवा मंत्रालय, भारत सरकार के तत्त्वावधान में मध्य प्रदेश शासन द्वारा आयोजित ओपन राज्य स्तरीय युवा उत्सव में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में अध्ययनरत 10 छात्रों के दल ने रविन्द्र भवन भोपाल में आयोजित लोकगीत समूह गायन विधा में पूरे प्रदेश में प्रथम स्थान अर्जित किया एवं 60 हजार की नगद राशि जीती. शोधार्थी यश गोपाल श्रीवास्तव के नेतृत्व में स्तुति खंपरिया, रिद्धी जैन, संजय कोरी, मैकलिन सिंह, यश पाठक, अतुल पथरोल, गोलू कुशवाहा, हिमांश खरारे, विधान चौबे, लक्ष्मीकांत अहिरवार एवं निखिल सोनी ने प्रतियोगिता में भाग लिया. गीत रचना छात्र आशुतोष सिंहई ने की. यह टीम अब नासिक में आयोजित राष्ट्रीय युवा उत्सव में प्रतिभागिता करेगी. नासिक प्रस्थान से पूर्व मध्य प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव द्वारा सभी दलों को कल दिनांक 10 जनवरी को रात्रिभोज में आमंत्रित किया. विश्वविद्यालय की कुलगुरु प्रो. नीलिमा गुप्ता ने सभी विद्यार्थियों को जीत के लिए शुभकामनाएं दीं एवं राष्ट्रीय स्तर पर आगामी प्रदर्शन के लिए अग्रिम शुभकामनाएं भी दीं. विद्यार्थियों ने बताया कि उक्त तैयारी के लिए मार्गदर्शन संगीत विभाग के सहा. प्राध्यापक डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर, डॉ. राहुल स्वर्णकार ने किया. सांस्कृतिक परिषद के समन्वयक डा.राकेश सोनी, डॉ. आशुतोष, डॉ. विवेक जायसवाल एवं अन्य कई शिक्षकों ने राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचने वाले वाले गायन समूह को शुभकामनाएं दी.

खेल जिन्दगी का आइना है, यह सब कुछ सिखाता है- मीर रंजन नेगी

विश्वविद्यालय: एआईयू वेस्ट जोन हैंडबॉल (पुरुष) प्रतियोगिता का हुआ शुभारम्भ

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में 10 से 13 जनवरी तक चलने वाली एआईयू वेस्ट जोन हैंडबॉल (पुरुष) प्रतियोगिता का भव्य शुभारम्भ विश्वविद्यालय के अब्दुल गनी खान स्टेडियम में हुआ. कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. गौर की प्रतिमा पर अतिथियों द्वारा माल्यार्पण के साथ हुई. शारीरिक शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ. विवेक साठे ने स्वागत वक्तव्य दिया और आयोजन की रूपरेखा प्रस्तुत की. इस अवसर पर विश्वविद्यालय स्पोर्ट्स बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. गिरीश मोहन दुबे एवं प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस. पी. उपाध्याय मंचासीन थे. भारतीय सेना के बैंड के साथ खिलाड़ियों ने अपने विश्वविद्यालय के ध्वज के साथ परेड में हिस्सा लिया. अतिथियों द्वारा सभी प्रतिभागियों को खेल शपथ दिलाई गई.

उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि अंतरराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी, कोच एवं 'चक दे इंडिया' फेम मीर रंजन नेगी ने कहा कि खेल में व्यक्ति हारता है, जीतता है और फिर हारता है. यह हार-जीत लगी रहती है लेकिन खेल भावना जीवन में सब कुछ सिखाता है. यह व्यक्ति के जीवन का एक आइना है. खेल हमें लाइफ स्किल के साथ-साथ जीवन में अनुशासन भी सिखाता है. उन्होंने अपने जीवन-संघर्ष की कई घटनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि एक खिलाड़ी जब जीत हासिल करता है तो सभी प्रशंसा करते हैं लेकिन जब हारता है तो उसे जनमानस में अलग दृष्टि से देखा जाने लगता है. उन्होंने कहा कि हॉकी के एक मैच में 07 गोल से हारने पर मेरे ऊपर कई आरोप लगे लेकिन मैंने हॉकी का दामन नहीं छोड़ा और हमने कड़ी मेहनत की और धनराज पिल्लई की कप्तानी में हमने गोल्ड मेडल जीता. उन्होंने एफ्रो एशियन गेम्स से जुड़े कई यादगार किस्से सुनाये. उन्होंने चक दे इण्डिया फिल्म के निर्माण की कई स्मृतियों को साझा करते हुए कहा कि हमने वास्तविक जीवन में उन लड़कियों को प्रशिक्षित किया जिन्होंने अपने कभी हॉकी का स्टिक नहीं पकड़ा था.

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रभारी कुलपति प्रो. प्रो. पी के कठल ने सभी खिलाडियों का हौसला आफजाई करते हुए खेल भावना के साथ खिलाड़ियों को अपना बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया. उन्होंने विश्वविद्यालय में खेल गतिविधियों की ख्याति को भी रेखांकित करते हुए कहा कि अकादमिक गतिविधि और खेल एक दूसरे के पूरक हैं. खेल के नियम हमें जीवन में अनुशासित रहना सिखाते हैं. खेल जीवन में उत्थान एवं गति लाता है. सभी खिलाड़ी निर्णायक मंडल के निर्णय को स्वीकार करते हुए अपने विश्वविद्यालय का नाम रोशन करें.

समारोह के उपरांत अतिथियों ने प्रतिभागियों से परिचय प्राप्त किया. कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुमन पटेल ने किया एवं आभार महेंद्र बाथम ने व्यक्त किया. इस अवसर पर इस अवसर पर प्रो. आशीष वर्मा, प्रो उत्सव आनंद, डॉ सुभाष हार्डिकर, डॉ मोनिका हार्डिकर, प्रदीप अभद्रा, बीनू राणा, विनय शुक्ला, अनवर ख़ान, डॉ मनोज जैन, डॉ राकेश सोनी, डॉ. राजेंद्र यादव, डॉ हिमांशु यादव, डॉ आशुतोष मिश्र, डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ वीरेंद्र, डॉ. रजनीश, डॉ. नवीन, डॉ. भूपेन्द्र पटेल, वि.वि. यंत्री राहुल गोस्वामी, हरदीप सिंह, सूरज, अभिषेक मंगल, कोटिल्या, संदीप राय रंजन मोहंती,

सुहैल कुरैशी सहित विश्वविद्यालय के कई शिक्षक, शहर के गणमान्य नागरिक, अधिकारी, कर्मचारी, छात्र एवं पत्रकार बंधु उपस्थित रहे.

डॉ. गौर को भारत रत्न मिले, यही उनके अवदानों के प्रति सच्ची आदरांजलि- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के कुलपति सम्मेलन कक्ष में विश्वविद्यालय के संस्थापक, पितृपुरूष, डॉ. सर हरीसिंह गौर को भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान ''भारत रत्न'' प्रदान किये जाने विषयक एक महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता जी की अध्यक्षता में संपन्न हुई.

गौरतलब है कि डॉ. सर हरीसिंह गौर को भारत रत्न प्रदान किये जाने का प्रयास विश्वविद्यालय विगत कई वर्षों से करता आ रहा है। इस हेतु समय-समय पर विभिन्न माध्यमों से ज्ञापन/प्रस्ताव भी भारत सरकार की ओर प्रेषित किये गये हैं. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने पुनः इस दिशा में कार्य करते हुये भारत रत्न समिति का गठन किया था. बैठक का उद्देश्य डॉ. सर हरीसिंह गौर को भारत रत्न प्रदान किये जाने की दिशा में किये गये कार्यों की समीक्षा एवं आगामी रूपरेखा तैयार कर नवीन प्रस्ताव भारत सरकार की ओर प्रेषित किये जाने के आयोजित था. बैठक के प्रारंभ में प्रो. संजय जैन जी ने भारत रत्न प्रदान किये जाने हेतु गठित समिति की पूर्व बैठकों एवं इस दिशा में किये गये कार्यो पर प्रकाश डाला एवं अपने विचार रखे.

बैठक में कुलपति ने डॉ. सर हरीसिंह गौर को नमन करते हुये विश्वविद्यालय द्वारा डॉ. गौर की स्मृतियों को अक्षुण्य बनाये रखने हेतु गौर पीठ की स्थापना की जानकारी देते हुये कहा कि शीघ्र ही गौर हैरीटेज सेंटर विश्वविद्यालय में प्रारंभ हो रहा है. इसके लिये औपचारिकतायें पूर्ण कर ली गई हैं. नवीन भवन के लिये बजट के प्रयास किये जा रहे हैं. बजट प्राप्त होते ही नवीन भवन के निर्माण का कार्य प्रारंभ कर दिया जायेगा. उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि डॉ. गौर को भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न क्यों मिलना चाहिये, डॉ. गौर क्यों इस सम्मान के हकदार हैं, इसके लिये डॉ. गौर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ-साथ उनका सामाजिक सरोकार, प्रतिबद्धता, सामाजिक उत्थान के प्रति उनकी विचारशीलता, स्त्री शिक्षा एवं सम्मान के लिये उनके प्रयास एवं इस दिशा में किये गये कार्यों, गैर बराबरी को दूर करने के लिये लाये गये विधि के प्रावधानों और शिक्षा जैसी महत्वपूर्ण शाख को तत्समय भारत के इस सुदूर स्थित सागर जैसे कस्बे में विश्वविद्यालय को खोलना - जिससे अंतिम पंक्ति का व्यक्ति भी उच्च शिक्षा के अपने स्वप्न को साकार कर सके- को रेखांकित करते हुये अवगत कराया जाये। जिससे लम्बे समय से डॉ. गौर को भारत रत्न प्रदान किये जाने के लिये की जा रही मांग साकार हो सके.

डॉ. गौर को भारत रत्न दिलाने के लिए हो समन्वित प्रयास- रघु ठाकुर

समाजवादी चिन्तक रघु ठाकुर ने भारत रत्न के लिये विश्वविद्यालय द्वारा किये जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुये अपने महत्वपूर्ण सुझाव रखे. उन्होंने भारत रत्न के लिये तैयार किये जाने वाले प्रस्ताव में कई सुझाव भी दिए. सर्वसम्मति से यव विचार बना कि डॉ. हरीसिंह गौर को भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न प्रदान किये जाने के लिये समस्त कार्य

सारगर्भित एवं एकीकृत ढंग से किये जायें, जिससे विश्वविद्यालय परिवार के साथ-साथ सागर नगरवासियों की यह अभिलाषा अपना मूर्त रूप पा सके.

बैठक में भारत रत्न के लिये समन्वित प्रयास के साथ- साथ डॉ. गौर के द्वारा किये गये महत्त्वपूर्ण कार्यों को रेखांकित करते हुये एक नवीन प्रस्ताव शीघ्रातिशीघ्र तैयार किये जाने के साथ ही एक प्रतिनिधि मंडल के गठन पर भी सहमती बनी. यह समिति माननीय गृहमंत्री, भारत सरकार एवं भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी से सौजन्य भेंट कर डॉ. सर हरीसिंह गौर को भारत रत्न का सर्वोच्च सम्मान प्रदान किये जाने के लिये भेंट कर उक्त प्रस्ताव की प्रति सौंपेगा. बैठक में प्रो. आर.के. त्रिवेद्वी, प्रो. पी.पी. सिंह , एस.आर. आठिया जी, डॉ. संदीप रावत, प्रो. संजय जैन, प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, डॉ. संजय शर्मा, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय उपस्थित थे.

राष्ट्र के पुनर्निर्माण में योगदान देकर विकसित भारत के सपने को साकार करें युवा- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

भारतीय परंपरा को अपनी जीवन शैली में अपनाकर होगा राष्ट्र का सम्यक पुनर्निर्माण- प्रो. लाभ

विश्वविद्यालय: विवेकानंद जयंती के अवसर पर विश्व दर्शन दिवस का आयोजन

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के दर्शनशास्त्र विभाग में 12 जनवरी 2024 को विवेकानंद जयंती के अवसर पर विश्व दर्शन दिवस का आयोजन किया. इस कार्यक्रम का उद्घाटन कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में किया. इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि साँची बौद्ध-भारतीय अध्ययन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बैद्यनाथ लाभ और विशिष्ट अतिथि जवाहर बाल भवन, भोपाल के निदेशक डॉ. उमाशंकर नगाइच थे. दर्शनशास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो. अम्बिका दत्त शर्मा तथा उपाचार्य एवं कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. अनिल कुमार तिवारी ने अतिथियों का स्वागत किया. "भारतीय संस्कृति के आधारभूत मूल्य एवं राष्ट्र के पुनर्निर्माण में उनकी भूमिका" विषय पर आयोजित यह कार्यक्रम भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली, द्वारा प्रायोजित था. विषय का प्रवर्तन करते हुये डॉ. अनिल तिवारी ने 'परिवार' एवं 'मोक्ष' की अवधारणा को भारतीय संस्कृति के मौलिक तत्त्व बताया.

प्रो नीलिमा गुप्ता ने अपने उद्बोधन में युवाओं को राष्ट्र के पुनर्निर्माण में योगदान देने एवं विकसित भारत के सपने को साकार करने का आह्वान किया. डॉ. नगायच ने वैदिक संस्कृति को ही भारतीय संस्कृति का पर्याय कहा. प्रो. लाभ ने अपने व्याख्यान में कहा कि बौद्ध परंपरा में

उपदिष्ट मूल्यों को जीवन में उतार कर राष्ट्र का सम्यक पुनर्निर्माण किया जा सकता है. इस अवसर पर विभिन्न संकायों के अधिष्ठाता, विभागाध्यक्ष, शिक्षक एवं अन्य कर्मचारियों सहित 200 से अधिक विद्यार्थी उपस्थित रहे. कार्यक्रम का संचालन दर्शनशास्त्र विभाग के अतिथि व्याख्याता डॉ. सत्यनारायण देवलिया ने किया तथा अन्य अतिथि व्याख्याता डॉ. नरेंद्र कुमार बौद्ध ने धन्यवाद ज्ञापन किया. विदित हो कि यूनेस्को द्वारा सन् 2002 में प्रतिवर्ष नवम्बर माह के तीसरे गुरुवार को विश्व दर्शन दिवस मनाने का निर्णय लिया गया, इस तिथि को सुकरात के जन्म दिवस के रूप में जाना जाता है. भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली भारत में इस समारोह को आयोजित करने हेतु अधिकृत संस्था है जो चुने हुये उच्च शिक्षण संस्थानों को समारोह हेतु वित्तीय सहायता देती है.

डॉ. हरीसिंह गौर विवि की टीम ने वेस्ट जोन (हैंड बॉल) में हासिल किया प्रथम स्थान

लगन, परिश्रम एवं जिजीविषा से सपनों को उड़ान मिलती है- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

विश्वविद्यालय: पश्चिम क्षेत्रीय अंतरविवि हैंडबाल (पुरुष) प्रतियोगिता का समापन

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में 10 से 13 जनवरी तक चलने वाली चार दिवसीय एआईयू वेस्ट जोन हैंडबॉल (पुरुष) प्रतियोगिता का समापन विश्वविद्यालय के अब्दुल गनी खान स्टेडियम में हुआ. कार्यक्रम की शुरुआत विश्वविद्यालय की कुलपति एवं समापन समारोह की मुख्य अतिथि प्रो. नीलिमा गुप्ता एवं अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा डॉ. गौर की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ हुई. शारीरिक शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ. विवेक साठे ने चार दिवसीय प्रतियोगिता का प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हुए सभी टीमों के योगदान की सराहना की. इस अवसर पर विश्वविद्यालय स्पोर्ट्स बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. गिरीश मोहन दुबे भी मंचासीन थे.

समापन समारोह के मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि हार-जीत खेल का नैसर्गिक हिस्सा है. आपका लगन, परिश्रम एवं जीजिविषा आपके सपनों को उड़ान देता है. खेल भावना हमें सिखाती है कि निरंतर अभ्यास से जीवन के हर लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है. विश्वविद्यालय की टीम ने 13 वर्षों के बाद वेस्ट जोन में पहली बार पुरुष हैंडबाल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हासिल किया है. यह विश्वविद्यालय के साथ-साथ पूरे सागर के लिए गौरव का विषय है. उन्होंने

बताया कि फिट इण्डिया अभियान के तहत माननीय प्रधानमंत्री जी की प्रेरणा से विश्वविद्यालय में सिंथेटिक ट्रैक एवं स्विमिंगपूल जैसी खेल सुविधाओं को बढ़ावा देने के लिए हेफा द्वारा विश्वविद्यालय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया है जिसके तहत जल्द ही विश्वविद्यालय में सिंथेटिक ट्रैक एवं स्विमिंगपूल का निर्माण करा कर खेल सुविधाओं को राष्ट्रीय स्तर का बनाने का प्रयास किया जायेगा. वेस्ट जोन के अंतिम चार में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर प्रथम, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर, द्वितीय, लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा संस्थान, ग्वालियर, तृतीय, कोटा विश्वविद्यालय, कोटा ने चतुर्थ स्थान किया. कुलपति ने टीमों को ट्राफी प्रदान कर उन्हें शुभकामनायें प्रेषित की. अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ, नई दिल्ली एवं विश्वविद्यालय के ध्वज का वरण कर प्रतियोगिता के समापन की घोषणा की गई. कार्यक्रम का संचालन महेंद्र बाथम ने किया एवं आभार डॉ. सुमन पटेल ने व्यक्त किया. इस अवसर पर इस अवसर पर अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ, नई दिल्ली के प्रतिनिधि , विनय शुक्ला, डॉ राकेश सोनी, डॉ राजेंद्र यादव, डॉ. हिमांशु यादव, डॉ आशुतोष मिश्र, डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ. रजनीश, डॉ. भूपेन्द्र पटेल, विश्वविद्यालय के कई शिक्षक, शहर के गणमान्य नागरिक, अधिकारी, कर्मचारी, छात्र एवं पत्रकार बंधु उपस्थित रहे.

मकर संक्रांति सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना का सबसे बड़ा पर्व- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

नववर्ष एवं मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ मिलन समारोह

डॉ हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में नववर्ष एवं मकर संक्रांति के अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

ने कहा कि हमारी भारतीय संस्कृति का सार सूत्र उसके भारतीय खान-पान एवं परंपराओं में निहित है. यह सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना का सबसे बड़ा पर्व माना जाता है. इस अवसर पर हम संकल्प लें कि हम सभी समन्वित प्रयासों से विश्वविद्यालय की अकादमिक एवं रचनात्मक गतिविधियों को उपलब्धियों के उतुंग शिखर तक ले जायेंगे. विश्वविद्यालय में नवागंतुक शिक्षकों, अधिकारीयों, कर्मचारियों के लिए भी इस मायने में विशेष है कि एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक समागम के जरिये वे सब एक दूसरे से परिचित हो सकेंगे. कुलपति ने सभी को इस अवसर बधाई एवं शुभकामनायें दी. उन्होंने इस तिथि पर पतंग उड़ाने के सांकेतिक महत्व को बताते हुए कहा कि यह एक समन्वित संकल्प के साथ नई ऊंचाइयों पर पहुँचने का प्रतीक है. भारतीय संस्कृति ऐसे कई पारंपरिक अवसरों एवं त्योहारों से समृद्ध है जिनके माध्यम से एकता और अखंडता का संदेश प्रवाहित होता है. इस अवसर पर विश्वविद्यालय के गौर प्रांगण में मकर संक्रांति के व्यंजनों का स्वल्पाहार कार्यक्रम भी आयोजित किया गया. इस अवसर पर विद्यार्थियों ने मकर संक्रांति के

हर्ष का प्रतीक पतंगबाजी भी की. कार्यक्रम में विवि के शिक्षक प्रो. पी.के. कठल, प्रो. नवीन कानगो, प्रोफ. एच. थामस, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय, उपकुलसचिव सतीश कुमार डॉ हिमांशु, डॉ आशुतोष, डॉ. राकेश सोनी, डॉ पंकज तिवारी सहित कई शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं एनसीसी के विद्यार्थी मौजूद रहे.

सीनियर रिर्सच फैलो अंकिता राजपूत, भारतीय वाणिज्य संघ मेमोरियल रिसर्च स्कालर अवार्ड से सम्मानित

74वीं अखिल भारतीय वाणिज्य सम्मेलन 2023 ’’एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य’’ थीम का आयोजन वाणिज्य विभाग व्यवसाय और वाणिज्य संकाय दिल्ली स्कूल आफ इकानामिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय और ओ.पी. जिंदल ग्लोबल विश्वविद्यालय, सोनीपत, हरियाणा के संयुक्त त्तवाधान में आयोजित हुआ जिसमें वाणिज्य विभाग (वाणिज्य एवं प्रबंधन अध्ययन शाला) डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की सीनियर रिर्सच फैलो (यूजीसी) अंकिता राजपूत ने मेमोरियल आईसीए. (भारतीय वाणिज्य संघ) रिसर्च स्कालर अवार्ड एवं राशि रू. 2000 से सम्मानित किया गया। यह सम्मान उन्हे उनके शोध शीर्षक भारतीय बैंको पर विलय से पहले और बाद के मूल्यांकन का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन (चयनित सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक और निजी क्षेत्र के बैंको के विषेष संदर्भ में) उनको ये सम्मान महामहिम श्री बंडारू दत्तात्रेय राज्यपाल, हरियाणा की उपस्थिति मे दी गई. वार्षिक सम्मेलन में देष भर से लगभग 3000 से अधिक प्रतिनिधि सम्मलित हुए. इस अवसर पर भारतीय वाण्जिय संघ के अध्ययक्ष प्रो. डब्लू के. सरवडे, प्रो. ए.के सिंह, प्रो. सी. राजकुमार, कुलपति ओ.पी. जिंदल यूर्निसिटी, भारतीय वाणिज्य संघ के पदधिकारी, डीन (वाणिज्य एवं प्रबंधन अध्ययन शाला) प्रो. वाय. एस. ठाकुर, प्रो. डी. के नेमा, एवं डॉ. गौतम प्रसाद ने प्रसन्नता व्यक्त की और उज्जवल भविष्य की कामना की.

सकारात्मक सोच, लगन और जूनून से ही लक्ष्य की प्राप्ति होती है- प्रो. बिसेन

विश्वविद्यालय:केन्द्रीय विश्वविद्यालय स्थापना दिवस पर विशेष व्याख्यान आयोजित

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में केन्द्रीय विश्वविद्यालय स्थापना दिवस अवसर पर विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में दोपहर 12 बजे से विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया. आयोजन के मुख्य अतिथि जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर के निवर्तमान कुलपति प्रो. प्रकाश एस. बिसेन थे. उन्होंने ‘फंक्शनल फ़ूडस इन ह्यूमन हेल्थ’ पर व्याख्यान दिया. कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रभारी कुलपति प्रो. पी के कठल ने की. इस अवसर पर अकादमिक अफेयर्स के निदेशक प्रो. नवीन कानगो मंचासीन थे. कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. गौर एवं देवी सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण के साथ हुई. प्रो. नवीन कानगो ने स्वागत वक्तव्य दिया एवं प्रो. यू के पाटिल ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया. प्रो. प्रकाश एस. बिसेन

ने कहा कि अपनी गाढ़ी कमाई से डॉ. गौर द्वारा स्थापित इस विश्वविद्यालय में आकर वे गौरवान्वित हैं. मेरे कैरियर और उत्थान में इस विश्वविद्यालय का अहम योगदान है. अपने व्याख्यान में उन्होंने सभी को मानव स्वास्थ्य के लिए कार्यात्मक भोजन के बारे में गहराई से बताया. पेड़-पौधों के भीतर होने वाली कई रासायनिक क्रिया-प्रक्रियाओं के जरिये उन्होंने वातावरणीय प्रभावों का जिक्र जिनमें पौधों के भीतर कंपाउंड बनते हैं. उन्होंने स्वास्थ्य के प्रति सचेत करते हुए लोगों को बताया कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने आस-पास के मौसम के अनुसार प्रयुक्त किए जा रहे फल और सब्जियों को ग्रहण करना चाहिए, इस धरती पर प्रत्येक स्थान के तापमान के अनुसार वहां फल सब्जी उपलब्ध हैं. ऐसे में किसी दूसरे तापमान संबंधी स्थान में उत्पादित किए खाद्य पदार्थ आपके स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो सकते हैं. आपको वही फल और सब्जियां उपयोग करनी चाहिए जो आपके क्षेत्र के वातावरण में पैदा होती हों. क्योंकि स्वास्थ्य के अनुसार वह पूर्ण पोषण से भरी होती है. प्राकृतिक वातावरण के विरुद्ध व्यवहार किये जाने पर पौधों से पोषक तत्त्व गायब हो जाते हैं. उन्होंने शरीर में बैक्टीरिया एवं एंटीबॉडी के कार्यों को बताते हुए कहा कि स्वस्थ रहने के लिए में रक्षा एवं प्रतिरक्षा तंत्र जरूरी है.

उन्होंने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए कहा कि अपनी डिग्री में ज्यादा अंकों के पीछे भागने से अच्छा है कि आप अपनी काबिलियत को बढ़ाओ, जरूरी नहीं कि आपके अंक कम हैं तो आप कुछ नहीं कर सकते. उन्होंने कम अंक पाने वाले अपने कुछ विद्यार्थियों की सफलता की कहानियां सुनाईं जिन्होंने अपने सपने के प्रति जुनून को बरकरार रखा और सफल इंसान के रूप में जीवन में आगे बढ़े. उन्होंने कहा कि सोच, लगन और जूनून से ही लक्ष्य हासिल किये जाते हैं. स्वयं को टेक्नॉलोजी ओरिएंटेड बनाएं और समय के साथ तालमेल बिठाते हुए अपने भविष्य को खुद गढ़ें. अध्यक्षता करते हुए प्रभारी कुलपति प्रो. कठल ने कहा कि यह विश्वविद्यालय केन्द्रीय विश्वविश्वविद्यालय के रूप में अपग्रेड होने के बाद अब युवावस्था में पहुँच रहा है. यह अवस्था जिम्मेदारियों का एहसास कराती है. सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए यह गौरव की बात है कि उन्हें यहाँ पढ़ने और कार्य करने का अवसर मिला है. हम सबकी जिम्मेदारी है हम सभी विचारवान तरीके से विश्वविद्यालय को आगे बढाने में अपना योगदान दें और विश्वविद्यालय को नई ऊंचाइयों पर ले जाएँ. उन्हें सभी को स्थापना दिवस की शुभकामनाएँ प्रेषित कीं.

कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुनीत वालिया ने किया और आभार प्रो.श्वेता यादव ने ज्ञापित किया. इस अवसर पर विश्वविद्यालय के प्रो. पी के खरे, प्रो. आशीष वर्मा, प्रो. जी एल पुणताम्बेकर, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. अनुपम शर्मा, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस. पी उपाध्याय, उपकुलसचिव सतीश कुमार, विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष, अधिष्ठाता, शिक्षकगण, अधिकारी, कर्मचारी एवं शोध छात्रों सहित विद्यार्थी उपस्थित रहे.

पक्षियों का मानव जीवन के अस्तित्व से गहरा नाता है- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

गौरैया संरक्षण की दिशा में विश्वविद्यालय का अभिनव पहल

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के सांस्कृतिक परिषद् के तत्त्वावधान में प्रकृति संरक्षण की दिशा में अभिनव प्रकल्प के तहत महर्षि पतंजलि भवन परिसर की रिटेनिंग वॉल की पाइप में गौरैया आवास का विधिवत उद्घाटन कार्यक्रम संपन्न

हुआ. इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि मनुष्य अपनी जरूरतों के मुताबिक़ जंगलों को काटकर अपने रिहायशी इलाकों का विस्तार करता जा रहा है. यदि प्रकृति का इसी तरह दोहन होता रहेगा तो पर्यावरणीय संकट उत्पन्न होते जायेंगे. उन्होंने कहा कि मनुष्य के अस्तित्व के लिए भी जैव-विविधता का होना जरूरी है. जैव-विविधता रहेगी तो प्रकृति भी बचा रहेगा और हम मनुष्य भी बचे रहेंगे. उन्होंने कहा कि पक्षियों का मानव जीवन के अस्तित्व से गहरा नाता है. इसलिए हमें उनके संरक्षण और पुनर्वास के लिए भी कदम उठाने चाहिए. उन्होंने एक अध्ययन के आंकड़े प्रस्तुत करते हुए कहा कि पक्षियों की संख्या तीन प्रतिशत प्रतिवर्ष घटती जा रही है. पेड़-पौधों की अंधाधुंध कटाई से पक्षियों का आशियाना ख़त्म होता जा रहा है जिससे पारिस्थितिकीय असंतुलन की स्थिति बन रही है और जैव-विविधता घट रही है. उन्होंने कहा कि गौरैया पक्षी खुशी का प्रतीक है. इनके संरक्षण की दिशा में हमें इसी तरह के अभिनव पहल करने की जरूरत है. उन्होंने कहा कि इन पक्षियों की नियमित निगरानी के साथ इनकी बढ़ती हुई संख्या पर एक अध्ययन भी किया जा सकता है. यह प्रकल्प प्रकृति के प्रति हमारी संवेदनशीलता का सूचक है. उन्होंने यह भी आश्वासन दिया कि विश्वविद्यालय इस दिशा में अन्य अभिनव पहल भी करेगा और एक उचित राशि भी आवंटित की जायेगी.

कार्यक्रम का संचालन डॉ. आशुतोष ने किया. इस अवसर पर छात्र-कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस. पी. उपाध्याय, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. आर टी. बेदरे, प्रो. बी. आई गुरु, डॉ. पंकज तिवारी सहित कई शिक्षक, अधिकारी, शहर के गणमान्य पत्रकार बंधु, शोधार्थी, विद्यार्थी एवं कर्मचारी उपस्थित थे.

विद्यार्थियों ने पेंटिंग कर सजाई है कॉलोनी

सांस्कृतिक परिषद् के समन्वयक डॉ. राकेश सोनी ने बताया कि गौर-गौरैया आवसीय परिसर को फाइन आर्ट्स के विद्यार्थियों गगन, जिया, दीपक, सत्यम, नेहा, चंदू, अनन्या, अक्षरा, संस्कार, श्री, पुष्प ने पेंटिंग और चित्रकारी कर सजाया है. कुलपति ने इन विद्यार्थियों को पुष्प देकर उत्साहवर्धन भी किया.

गौरैया को आवंटित किये गए हैं क्वार्टर

रिटेनिंग वॉल पर बसी आवासीय कॉलोनी में फिलहाल 18 क्वार्टर आवंटित किये गए हैं जिनमें चिनी, मिनी, किटी, हनी, गोल्डी, जेरू, जैस्मिन, लकी, सिनी, जिया, इशू, कोको, जॉय, नील, शीतल, चीकू, चेरी, सोनी के साथ इनके सैंकड़ों साथी रहते हैं.

वार्डन करेंगे पक्षियों की देखभाल

चीफ वार्डन प्रो. नीलिमा गुप्ता के संरक्षण में डॉ. राकेश सोनी, डॉ. आशुतोष, डॉ. अरुण, डॉ. नितिन और डॉ. बृजेश सहित पांच वार्डन भी हैं जो इन पक्षियों की देख-भाल करेंगे.

विश्वविद्यालय: हिंदी विभाग के डॉ. आशुतोष को राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग के डॉ. आशुतोष को 'वनमाली सृजन पीठ' द्वारा राष्ट्रीय वनमाली कथा सम्मान-2024 के अंतर्गत 'युवा कथा सम्मान' दिए जाने की घोषणा की गई है. हिंदी साहित्य में यह एक बहुचर्चित और प्रतिष्ठित राष्ट्रीय सम्मान है. वर्ष 2010 से हिन्दी विभाग में कार्यरत डॉ. आशुतोष देश के समकालीन कथा जगत के सुप्रसिद्ध हस्ताक्षर हैं. उनकी पहली कहानी 'राम बहोरन की अनात्मकथा' 2011 में तद्भव पत्रिका में प्रकाशित हुई थी.

कहानियों की पहली पुस्तक 'मरें तो उम्र भर के लिए' भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली से और दूसरी पुस्तक 'उम्र पैंतालीस बतलाई गयी थी' आधार प्रकाशन, चण्डीगढ़ से प्रकाशित हुई है. इसी वर्ष राष्ट्रीय पुस्तक मेला दिल्ली में वाणी प्रकाशन से 'मरें तो उम्र के लिए' पुस्तक का चौथा संस्करण प्रकाशित होने जा रहा है. आशुतोष द्वारा लिखित, संपादित और सहलेखन में लगभग दस पुस्तकें प्रकाशित हैं. आशुतोष की लिखित पुस्तक 'प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी : मूल्य और मूल्यांकन' को राष्ट्रीय शिक्षा नीति की पाठ्यचर्या के अंतर्गत यूजीसी द्वारा बारह भारतीय भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है. अपने विशिष्ट कथा लेखन के लिए राष्ट्रीय स्तर पर भारतीय ज्ञानपीठ नवलेखन अनुशंसा पुरस्कार-2012, भारतीय भाषा परिषद कोलकाता का युवा पुरस्कार-2016 उन्हें प्राप्त हो चुके हैं. दिनांक 26-28 फरवरी 2024 को भोपाल में आयोजित समारोह में उन्हें यह सम्मान प्रदान किया जाएगा. सम्मानस्वरूप उन्हें प्रशस्ति-पत्र और इक्यावन हजार रुपये की राशि प्रदान की जाएगी. डॉ. आशुतोष को मिलने वाले इस राष्ट्रीय सम्मान से हिन्दी विभाग और विश्वविद्यालय का अखिल भारतीय स्तर पर अकादमिक एवं साहित्यिक गरिमा में अभूतपूर्व श्रीवृद्धि हुई है. समस्त विश्वविद्यालय परिवार ने उन्हें बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की हैं.

भारत और भारतीयता के स्वभाविक प्रतीक हैं राम

'समय राम:साहित्यिक प्रसंग' विषय पर परिचर्चा

आज डॉक्टर हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर, मध्यप्रदेश की भाषा अध्ययनशाला में 'समय राम:साहित्यिक प्रसंग' विषय पर परिचर्चा हिंदी विभाग के आचार्य नंददुलारे वाजपेयी सभागार में आयोजित हुई, जिसमें विभिन्न वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए. कार्यक्रम की संयोजक, भाषा अध्ययनशाला की डीन प्रोफेसर चंदा बेन ने बीज वक्तव्य के माध्यम से विषय प्रवेश कराया, जिसमें उन्होंने कहा कि भारत और भारतीयता के स्वभाविक प्रतीक हैं राम उनके चरित्र में औदात्य है, जो सभी जीवों को समान भाव से सम्मान देता है.

आज जब पूरा विश्व राममय हो रहा है तो साहित्यिक संदर्भ में भी राम पर चर्चा आवश्यक और महत्वपूर्ण हो जाती है. व्याख्यान कार्यक्रम में डॉक्टर अवधेश कुमार ने तुलसी के राम विषय पर बात करते हुए कहा कि तुलसी के राम मानवतावादी है. डॉक्टर संजय कुमार ने वाल्मीकि रामायण में राम के चरित्र पर प्रकाश डाला.

डॉक्टर अरविंद कुमार ने कबीर के राम, डॉक्टर रामहेत गौतम ने जातक कथाओं में राम पर अपने विचार व्यक्त किए. डॉक्टर आशुतोष ने भवभूति के राम पर अपनी बात रखते हुए कहा कि भवभूति के राम: राम के राजत्त्व और राम के रामत्त्व के बीच के द्वंद्व में है जिसके अंत में रामत्व की विजय होती है. प्रोफेसर राजेन्द्र यादव ने निराला के राम को समझाते हुए बताया कि निराला ने अपनी कविता राम की शक्ति की पूजा में आजादी के संघर्ष के समाज को उत्साहित करने का कार्य किया है. अपने अध्यक्षीय भाषण में हिंदी विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि राम सर्वव्यापी हैं. उनका चरित्र समाज का मार्गदर्शक है, जिसका अनुसरण करना चाहिए. वह संघर्ष में भी धैर्य नहीं खोते है. राम वंदना का गायन शोधार्थी सृष्टि सिंह ने किया. कार्यक्रम का संचालन डॉक्टर हिमांशु कुमार ने किया तथा आभार हिंदी विभाग के शोध छात्र शैलेंद्र सिंह यादव ने माना। इस कार्यक्रम में भाषा अध्ययन शाला के सभी विभागों के शिक्षक, शोधार्थी और विद्यार्थी उपस्थित रहे.

आदिवासियों के सर्वांगीण विकास के लिए अकादमिक पहल करेगा विश्वविद्यालय-प्रो. नीलिमा गुप्ता

ओडिशा के सेंटर फॉर आदिवासी रिसर्च एंड डेवलपमेंट और विश्वविद्यालय बीच संपन्न हुआ अकादमिक समझौता

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर और सेंटर फॉर आदिवासी रिसर्च एंड डेवलपमेंट, ओडिशा के बीच आदिवासी विकास और इससे सम्बंधित शोध एवं अध्ययन के लिए एक अकादमिक समझौता हुआ. दिनांक 20 से 23 जनवरी तक ओडिशा के रोवेनशॉ विश्वविद्यालय, कटक में तिरालिसवें वार्षिक ओडिशा हिस्ट्री कांग्रेस के तत्त्वावधान में आईसीसीएसआर, नई दिल्ली द्वारा प्रायोजित 'इंटरनेश्नल कॉनक्लेव ऑन आदिवासी क्वेश्चन एंड पॉलिसी रोडमैप' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में यह अकादमिक समझौता संपन्न हुआ. विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण के अध्यक्ष प्रो. किशोर के. बासा, रोवेनशॉ विश्वविद्यालय के कुलाधिपति प्रो. संजय के. नायक स्थानीय सांसद श्री भर्तृहरि महताब, विधायक श्री सौविक बिस्वाल, ओडिशा हिस्ट्री कांग्रेस के अध्यक्ष प्रो. हरिहर पंडा की गरिमामयी उपस्थिति में यह अकादमिक समझौता (एमओयू) संपन्न हुआ. इस अवसर पर अपने उद्बोधन में कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि आदिवासी समुदाय के विकास की दिशा में विश्वविद्यालय का यह एक अहम प्रयास है. विश्वविद्यालय और सेंटर फॉर आदिवासी रिसर्च एंड डेवलपमेंट (CARD) संयुक्त रूप से अपने शोध एवं परियोजनाओं के माध्यम से आदिवासी विकास पर अध्ययन करेंगे और पॉलिसी दस्तावेज के साथ-साथ नवाचारी कार्यक्रम भी चलाएंगे ताकि आदिवासी समाज को हम मुख्यधारा से जोड़ सकें और विकसित भारत की संकल्पना साकार हो सके. इस अकादमिक समझौते के माध्यम से हम आदिवासी समाज के सर्वांगीण विकास के लिए मिलकर कार्य करेंगे. कार्यक्रम में इस अकादमिक समझौते के समन्वयक एवं विश्वविद्यालय के मानव विज्ञान विभाग के प्रो. अजीत जायसवाल ने वक्तव्य देते हुए कहा कि हमें इस बात की पड़ताल करनी होगी कि हम आदिवासी समाज के विकास की दिशा में किन आयामों पर पिछड़ रहे हैं. उन्होंने कहा कि यदि हमें आदिवासी समुदाय का वास्तविक विकास करना है तो हमें आदिवासी समाज को साथ में जोड़कर कार्य करने की आवश्यकता है.

कार्यक्रम में सेंटर फॉर आदिवासी रिसर्च एंड डेवलपमेंट के अधिकारीगण, रोवेनशॉ विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी एवं हिस्ट्री कांग्रेस के प्रतिभागी उपस्थित थे.

विश्वविद्यालय के सीनियर डिवीज़न एनसीसी कैडेट्स पीएम रैली में करेंगें प्रतिभाग

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो० निलीमा गुप्ता के संरक्षण एवं सागर एनसीसी ग्रुप के ग्रुप कमांडर ब्रिगेडियर अशोक मनोचा के निर्देशन में विश्वविद्यालय के कुल छः सीनियर डिवीज़न के एनसीसी कैडेट्स अंडर ऑफिसर शिभान्शु चौबे, सार्जेंट मृत्युंजय सिंह गौर, सीएसएम कारन रजक, कार्पोरल प्रभाष कुमार ओझा, कैडेट आदित्य बमदेले बसोर तथा कैडेट सुभांशु कुमार पटेल, नई दिल्ली में आयोजित होने वाले पचहत्तरवें गणतंत्र दिवस परेड में प्रतिभाग किया.

3 एम पी सिग्नल कंपनी एनसीसी इकाई के कंपनी कमांडर लेफ़्ट० (डॉ) धर्मेन्द्र कुमार सर्राफ ने बताया कि पहली बार विश्वविद्यालय से इतने कैडेट्स गणतंत्र दिवस शिविर के लिए मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ़ एनसीसी निदेशालय के लिए चयनित किये गए थे. जिसमें कमान अधिकारी कर्नल अरुण बेन्सला के मार्गदर्शन, लेफ़्ट० डॉ. गौतम प्रसाद और अन्य पीआई स्टाफ के सहयोग से प्राप्त हुई है. विश्वविद्यालय व एनसीसी के साथ सागर ग्रुप के लिए भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि की बात है. इस प्रतियोगी शिविर में विश्वविद्यालय के सीनियर डिवीज़न एनसीसी कैडेट्स ने यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम, पी एम रैली, फ्लैग एरिया, गार्ड ऑफ़ ऑनर एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे महत्वपूर्ण स्पर्धाओं में प्रतिभाग किया और अपना-अपना स्थान सुनिश्चित किया है. ध्यातव्य है कि माननीय कुलपति प्रो. गुप्ता के संरक्षण में विश्वविद्यालय के सीनियर डिवीज़न एनसीसी कैडेट्स लगातार उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं. इस अवसर पर एनसीसी ग्रुप हेडक्वार्टर के ट्रेनिंग ऑफिसर एवं विश्वविद्यालय के कुलसचिव और वित्ताधिकारी के साथ विभिन्न पदाधिकारियों ने सभी सफल एनसीसी कैडेट्स को बधाई दी है.

विश्वविद्यालय में हुआ श्री राम लला प्राण प्रतिष्ठा का सजीव प्रसारण

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के अभिमंच सभागार में अयोध्या में आयोजित श्री राम लला प्राण प्रतिष्ठा का सजीव प्रसारण किया गया. कार्यक्रम के पूर्व मुख्य अतिथि शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुलभाई कोठारी, विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के संचालक अशोक कड़ेल, स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय सागर के कुलाधिपति डॉ. अजय तिवारी, डॉ. देशराज शर्मा, राष्ट्रीय संयोजक शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, न्यास के राष्ट्रीय प्रवासी कार्यकर्ता एवं कोषाध्यक्ष सुरेश गुप्ता ने श्री राम चरण पादुका पर पुष्पार्पण किया.

उपस्थित सभी ने प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के दौरान मंगलगान किया. रामलला की आरती गायन में सहभागिता की. विद्यार्थियों ने जोश के साथ जय घोष भी किया. प्राण-प्रतिष्ठा उपरान्त प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी का भाषण भी सुना. कार्यक्रम में मिष्ठान्न वितरण भी किया गया. अयोध्या से लाइव प्रसारण कार्यक्रम में बड़ी संख्या में शिक्षक, शोधार्थी, विद्यार्थी, अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित थे.

नाट्यकला के विद्यार्थियों ने दी राम दरबार की प्रस्तुति

विश्वविद्यालय के नाट्यकला के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक परिषद् के समन्वयक डॉ. राकेश सोनी के निर्देशन में राम दरबार की झांकी प्रस्तुत की.

परस्पर सहयोग एवं समन्वय से ही खुलेंगी उत्कृष्ट शोध की राहें- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

मध्य क्षेत्र कुलपति समागम में अनुसंधान तथा अभिनव विकास योजनाओं पर हुआ मंथन

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता भारतीय विश्वविद्यालय संघ, मध्य क्षेत्र के कुलपतियों की वार्षिक बैठक में सम्मिलित हुई. यह बैठक गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर में दिनांक 18-19 जनवरी 2024 को संपन्न हुई. आयोजन के मुख्य थीम 'अनुसंधान का पोषण और नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र' के सत्र 'अनुसंधान के लिए नवीन वित्त पोषण मॉडल' पर परिचर्चा के दौरान उन्होंने अपना वक्तव्य देते हुए कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये. प्रो. गुप्ता ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि वैश्विक परिदृश्य में अनुसंधान के लिए किसी भी शैक्षणिक संस्थान में केन्द्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला एक महत्वपूर्ण सह इकाई के रूप में ना वरन शोधार्थियों के लिए अपितु अनुसंधान में रूचि रखने वाले एवं पठन-पाठन से जुड़े हुए शिक्षाविदों, शिक्षकों के लिए भी महत्वपूर्ण इकाई होती है। आज भारतीय संस्थानों में भी विदेशी संस्थानों की तर्ज पर केन्द्रीय अनुसंधान प्रयोगशालाएँ विकसित की जा रही हैं. इन प्रयोगशालाओं में अत्याधुनिक विश्लेषणात्मक और उच्च गुणवत्ता वाले उपकरण जो एक समय अनुपलब्ध थे वे सहज उपलब्ध हैं एवं शोधार्थी एक ही स्थान पर इन उपकरणों के माध्यम से अपने शोध कार्य को संपन्न कर रहे हैं। आज देश में इन केन्द्रीय अनुसंधान प्रयोगशालाओं में यू.जी., पी.जी., पीएच.डी. और अन्य प्रोजेक्ट के छात्रों को अनुसंधान में सहायता के लिए वैज्ञानिक और तकनीकी सेवाएं प्रदान करने के लिए योग्य कर्मियों को रखा जाता है. इस प्रकार की सुविधा अनुसंधान की दक्षता को अंतर्राष्ट्रीय मानकों के स्तर पर बढ़ाने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व करती है.

उन्होंने कहा कि उच्च शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली का यह उद्देश्य रहा है कि शिक्षा के क्षेत्र में ऐसी संस्थाओं को विकसित किया जाए एवं उन्हें पर्याप्त अनुदान प्रदान किया जाये जिससे ये शैक्षणिक संस्थान शोधार्थियों को उनके शोध में आने वाली समस्याओं, दुर्लभ पाठ्य सामग्रियों एवं अनुसंधान आनुषांगिक सामग्रियों के लिए न केवल परामर्श देने की भूमिका में रहें बल्कि इसके लिए पर्याप्त रूप से परामर्श के साथ-साथ शैक्षणिक एवं अनुसंधानात्मक सहयोग भी प्रदान करें। ज्ञान के विकास में आने वाली बाधाओं को दूर कर शोध के लिए एक नई दिशा निर्धारित करें. कौशल का विकास, प्रक्रिया का विश्लेषण, रणनीति विकास जैसी सेवाएँ भी परामर्श केन्द्र प्रदान करें. प्रो. गुप्ता ने कहा कि शोधकर्ताओं को जटिल समस्याओं को हल करने और समुचित निर्णय लेने के लिए सहयोगात्मक अनुसंधान करना चाहिए. यह ऐसी कुंजी है जिसमें छात्र अपने विचारों का विनिमय कर अनुसंधान को बढ़ा सकते हैं. इसके परिणाम बहुत उत्कृष्ट रहे हैं. बहुत से महान वैज्ञानिक हुए हैं जिन्होंने मिलकर विज्ञान के क्षेत्र में नवीन शोध के माध्यम से चिकित्सीय उपकरण, वेक्सीन, मानव जीवन रक्षक दवाएँ विकसित करने का कार्य किया गया है. यह तभी संभव होता है जब हम एक शैक्षणिक पटल पर विचारों के आदान-प्रदान के लिए खुले मस्तिष्क से सहयोगात्मक विचाराधारा को विकसित कर सकें.

पुरा छात्र एवं शिक्षक कर सकते हैं शोध एवं अनुसंधान में सहयोग

उन्होंने कहा कि शैक्षणिक संस्थान पुरा छात्रों एवं शिक्षकों से सहयोग प्राप्त कर अपने शोध को बढ़ा सकते हैं। हमारे शैक्षणिक संस्थानों के पूर्व छात्र अपने-अपने विषयों में शोध कार्य पूर्ण कर देश-विदेश के विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों में कार्य कर रहे हैं. संस्थानों में कार्य करने वाले ऐसे पूर्व विद्यार्थियों का एक सहज एवं भावनात्मक संबंध अपने-अपने संस्थानों से बना रहता है. इनके सहयोग से शोध को बढ़ा सकते हैं एवं शैक्षणिक संस्थानों में वित्तीय भार को कम किया जा सकता है. एलुमनी एसोशिऐशन इस कार्य को बेहतर तरीके से कर सकता है और अपने पूर्व छात्रों के साथ-साथ वर्तमान छात्रों के बीच एक परामर्श इकाई के रूप में कार्य कर शोध कार्यों में सहयोग प्रदान कर सकता है. आज भारत सरकार के कई संस्थान शोध कार्यों को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय अनुदान प्रदान कर रहे हैं. इन वित्तीय अनुदानों में विज्ञान, प्रौद्योगिकी, पर्यावरण, जीव विज्ञान, मानव विज्ञान के साथ-साथ समाज विज्ञान के क्षेत्र में भी सहयोगात्मक सह विषयात्मक शीर्षकों पर शोध के लिए अनुदान प्रदान कर रहे हैं. अनुदान प्रदान करने का उद्देश्य ही यह है कि शोधार्थी अपने नवीन शोधों के माध्यम से समाज को उत्कृष्ट परिणामत्मक परिणाम दे सकें. इस सत्र की गतिविधियों को सदन द्वारा सराहा गया और विशेषकर युवाओं में शोध के प्रति जागरूकता तथा शोध हेतु वित्तीय सहायता के मॉडल तथा उपलब्धता की पूर्ण जानकारी प्राप्त हुई. कार्यक्रम में मध्य क्षेत्र के कुलपतियों सहित भारतीय विश्वविद्यालय संघ के पदाधिकारी, विश्वविद्यालय के शिक्षक उपस्थित रहे.

विश्वविद्यालय में Tech Fest 2024 (INTRA BYTEBLOOM'S) Competition का आयोजन

कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग के BCA एवं MCA के विद्यार्थियों के लिए Tech Fest 2024 (INTRA BYTEBLOOM'S) Competition का आयोजन दिनॉक 23 एवं 24 जनवरी 2024 को कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग

विभाग में आयोजित है. इस आयोजन के प्रथम दिवस उद्घाटन सत्र में प्रो. एच. थॉमस, सीनियर प्रोफेसर, एप्लाईड ज्योलॉजी विभाग मुख्य अतिथि थे जिन्होंने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की. इसके पश्चात कार्यवाहक विभागाध्यक्ष प्रो. रणवीर कुमार ने अपना उद्बोधन में Tech Fest 2024 (INTRA BYTEBLOOM'S) Competition के संबंध में विस्तृत जानकारी छात्रों को दी. डॉ. अभिषेक बॅसल, द्वारा उद्घाटन सत्र में धन्यवाद ज्ञापित किया गया. इसके पश्चात विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताये जैसे:- Poster Presentation, Techmind (IT Quiz), Decode IQ (Puzzle), Code Combat (Coding), Code Unfold (Debugging) इत्यादि का आयोजन किया गया. इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को आई.टी. कंपनियों द्वारा प्लेसमेंट की प्रक्रिया में आयोजित विभिन्न चरणों से अवगत कराना था. इस आयोजन को सफल बनाने में विभाग के शिक्षक डॉ. अभिषेक बॅसल, डॉ. रंजीत रजक, श्री कमलकान्त अहिरवार, श्री गौरव जैन, श्री प्रशान्त कुमार नामदेव, श्रीमति रिचा पाठक, श्री सतीश चौरसिया एवं बी.सी.ए. तथा एम.सी.ए. विभाग के बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया है.

लोकतांत्रिक मूल्य जीवन में स्थापित करें तभी वास्तविक लोकतंत्र फलीभूत होगा- कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के गौर प्रांगण में राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस धूमधाम से उल्लासपूर्वक मनाया गया. इस अवसर पर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने ध्वजारोहण किया. ध्वजारोहण के उपरांत राष्ट्रगान हुआ और कुलपति ने सभा को संबोधित किया. उन्होंने राष्ट्रीय-पर्व गणतंत्र दिवस की शुभकामनाएँ एवं बधाई देते हुए कहा कि 26 जनवरी हमारे देश की स्वअर्जित और स्वअनुशासित अमरता के उद्घोष का राष्ट्रीय पर्व है. इसी दिन 1950 में हमारे देश ने एक राष्ट्र के रूप में अपने महान संविधान को अंगीकार कर उन्नत भविष्य की आधारशिला रखी थी. एक

विधान और एक संविधान के शासन ने हमें एक आजाद एवं सम्प्रभु राष्ट्र के सम्मानित नागरिक होने का अधिकार दिया. आज का दिन आजादी, बलिदान, त्याग, समर्पण, एकताऔर सम्प्रभुता के अभिनव बसंत का दिन है. हमारी सम्प्रभुता के इस बसंत को लाखों लोगों ने अपने लहू से सीचा है. वे ही बसंत के अग्रदूत थे, वे ही इस बसंत के हरकारे थे. आज हमारा राष्ट्र अपने उन नायकों के प्रति नतमस्तक है.

हमारे संविधान ने हमें सर्व अधिकार सम्पन्न स्वाधीन नागरिक की गरिमा प्रदान की. समता, समानता और बंधुत्व हमारे संविधान की मूल चेतना है. संविधान के सार्वभामिक आलोक में आज हमारा देश चुतर्दिक प्रगति कर रहा है. ज्ञान-विज्ञान, शोध-अनुसंधान, समाजविज्ञान, मानविकी, भाषा, कला, रक्षा, अंतरिक्ष एवं जल-थल-नभ सभी क्षेत्रों में आज हमारा देश उल्लेखनीय प्रगति करते हुए दुनिया के विकसित देशों की पंक्ति में एक आदर्श और मर्यादित राष्ट्र के रूप में अपनी विशिष्ट भूमिका का निर्वाह कर रहा है. उन्होंने कहा कि हमारा देश भारत एक सक्षम नेतृत्व और दृढ संकल्प शक्ति के साथ वैश्विक स्तर पर अपनी प्रभावषाली भूमिका के साथ आगे बढ़ रहा है. माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा यूनाइटेड नेशन में योगा सत्र का नेतृत्व कर गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया गया. यह भारत की पारम्परिक ज्ञान राशि की ताकत है. इसी वर्ष भारत दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती हुई अर्थ व्यवस्था वाला प्रमुख देश बना. डिजिटल भुगतान में पूरी दुनिया को पीछे छोड़ते हुए भारत ने सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया. हमने सबसे ज्यादा डिजिटल लेन-देन का कीर्तिमान बनाया जो भारत की बढ़ती डिजिटल लिटरेसी और आत्मनिर्भरता का जयघोष है. भारत आज अपनी विषिष्ट सामरिक, आर्थिक परियोजनाओं के साथ ही अपनी सनातन सांस्कृतिक पहचान के साथ भी अग्रिम पंक्ति में खड़ा है. अयोध्या दीपोत्सव में 22 लाख से अधिक दीप जलाकर एक बार फिर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया गया. 22 जनवरी को अयोध्या में शान्ति, सद्भाव और भव्यता के साथ श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा कर भारत-भूमि ने अपनी नियति से साक्षात्कार किया. हमारा आज का भारत बढ़ता हुआ भारत है, आलोकित भारत है. हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारे राष्ट्र निर्माताओं ने एक महान राष्ट्र का जो स्वप्न हमें दिया था, उसे अपने-अपने स्तर पर अपने-अपने ढंग से हमें साकार करने का अवसर मिला है.

हमारा सौभाग्य इस अर्थ में भी विशेष है कि हम एक ऐसे शैक्षणिक संस्थान से जुड़े हैं जिसके संस्थापक डॉ. सर हरीसिंह गौर स्वयं संविधान-सभा के सम्मानित सदस्य थे. हमारा विश्वविद्यालय गौर साहब जैसे पुरोधा के शैक्षिक संकल्पों की जीवित अग्निशिखा है. इसलिए हम सबका उत्तरदायित्व और जबाबदेही बहुत बढ़ जाती है. आप सबके सहयोग से हमारा विश्वविद्यालय अपने अकादमिक गौरव में निरन्तर श्रीवृद्धि कर रहा है. हम अपने विद्यार्थियों, शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों की अमूल्य निष्ठा एवं परिश्रम से एक श्रेष्ठतम शैक्षिक संस्थान के रूप में अपनी अभिनव उपस्थति दर्ज करा रहे हैं. उन्होंने कहा कि हमारा विश्वविद्यालय बड़े स्तर पर शैक्षिक नवाचार, प्रशासनिक दक्षता एवं अकादमिक दृढ़ता के साथ कार्य कर रहा है. पारम्परिक ज्ञान, भारतीय-बोध के साथ ही विज्ञान और अनुसंधान के क्षेत्र में हम वैश्विक स्तर की तकनीकी से सक्षम, संवेदनशील और चेतनावान नागरिक निर्मित कर रहे हैं. हमारे विश्वविद्यालय ने अपनी अकादमिक उत्कृष्टता के आधार पर इतिहास में पहली बार नैक मूल्याकंन में ए प्लस ग्रेड प्राप्त किया. विश्वविद्यालय ने भारतीय सेना की प्रमुख इकाई महार रेजिमेन्ट के साथ एक अकादमिक समझौते पर हस्ताक्षर किया जो शिक्षा और शौर्य का एक साक्षा अनुबंध है साथ ही विश्वविद्यालय की शैक्षणिक भूमिका का नया अध्याय है.

उन्होंने विश्वविद्यालय की कुलपति के रूप में भारतीय विश्वविद्यालय संघ की पहल पर ताइवान की अकादमिक यात्रा का जिक्र करते हुए कहा कि ताइवान के अनेक विश्वविद्यालयों के साथ अकादमिक साझेदारी की सम्भावनाओं का अध्ययन किया गया. वहाँ के कई विश्वविद्यालयों ने इस सम्बन्ध में अपनी रूचि की अभिव्यक्ति भी की है. डेसडन, जर्मनी में आयोजित भारतीय विश्वविद्यालय संघ की गवर्निंग काउंसिल की बैठक में विश्वविद्यालय के प्रतिनिधित्व को रेखांकित करते हुए कहा कि इसमें भारतीय एवं भारत के बाहर के विश्वविद्यालयों के मध्य अकादमिक सम्बन्धों की सम्भावनाओं पर सार्थक विचार-विमर्श किया गया.

उनहोंगे गौर गौरैया जैसे नए प्रकल्पों, विश्वविद्यालय के इतिहास में पहली बार विश्वविद्यालय की हैंडबॉल टीम के वेस्ट जोन प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्ण पदक जीतने, विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों के श्रेष्ठ प्रकाशनों, अकादमिक सम्मानों को रेखांकित करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय की अकादमिक गरिमा राष्ट्रीय स्तर पर रेखांकित की जा रही है. उन्होंने शैक्षणिक-गैर शैक्षणिक पदों की लगातार भर्ती प्रक्रिया का जिक्र करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय की कुलपति के रूप में अपने शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सर्वोच्च हितों, अधिकारों एवं गरिमा के प्रति वचनबद्ध हूँ. उन्होंने कहा कि एक कुलपति के रूप में हमारी कोशिश है कि हमारा विश्वविद्यालय वैश्विक स्तर पर ज्ञान-विज्ञान और शोध-संवाद का एक श्रेष्ठ एवं अग्रणी संस्थान के रूप में स्वयं को परिभाषित कर सकें. उन्होंने कहा कि आज हमारे राष्ट्र के सनातन जागरण का उज्ज्वल महोत्सव का दिन है. यह हमारे संविधान के सम्प्रभु सम्पन्नता का दिन है. इसलिए मैं विशेष रूप से अपने विद्यार्थियों से कहना चाहती हूँ कि लोकतंत्र वास्तविक अर्थों में तभी फलीभूत होगा जब लोकतांत्रिक मूल्य हमारे जीवन में स्थापित होंगे. हमारे कर्म में उतरेंगे. आप एक महान राष्ट्र के भविष्य हैं. आप अपनी उम्र के सबसे प्रखरतम समय में हैं. पूरी दुनिया आपकी ओर देख रही है. मा. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने कहा था कि 'यही समय है, सही समय है', मैं आप सभी को आज मा. प्रधानमंत्री जी के उस आवाहन की स्मृति दिलाना चाहती हूँ कि आप जहाँ हैं जिस भी भूमिका हैं, देषहित में मन- प्राण से जुट जाइये, क्योंकि ''यही समय है, सही समय है.'' समारोह में विश्वविद्यालय के शिक्षक, सेवानिवृत्त शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, छात्र-छात्राएं उपस्थित थे.

गौर भवन में भी हुआ ध्वजारोहण, एनसीसी कैडेट्स ने दी सलामी

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने गौर भवन में भी ध्वजारोहण किया एवं एनसीसी कैडेट्स ने कुलपति को सलामी दी.

विद्यार्थियों ने प्रस्तुत किए देशभक्ति गीत

गणतंत्र दिवस के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में संगीत विभाग के विद्यार्थियों ने देश भक्ति आधारित सांस्कृतिक प्रस्तुति दी. कार्यक्रम का संयोजन डॉ अवधेश तोमर, डॉ राहुल स्वर्णकार एवं सांस्कृतिक समन्वयक डॉ राकेश सोनी ने किया.

प्रस्तुतकर्ता छात्र-छात्राएं रिद्धी जैन, हिमांश खरारे, गोलू कुशवाहा, विधान चौबे, यश पाठक, स्तुति खम्परिया,आदित्य प्रकाश आर्युमान श्रीवास्तव,हितांशी पमनानी, तृप्ति सेन, वंशिका व्यास, शुभांशिता ठाकुर,अंशुल आठिया,विकास कुमार,आयषी

कुशवाहा, मनीष सोनी थे. संगत - शोध छात्र यश गोपाल श्रीवास्तव एवं गगन राज ने की. सिंथ पर अतुल पथरोल एवं ताल वाद्यों पर मैकलिन सिंह, ओम भट्ट, विधान चौवे ने संगत की.

विद्यार्थी हर तरह के दबाव से बचें, निर्णायक बनें- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

विश्वविद्यालय में ‘परीक्षा पे चर्चा 2024’ कार्यक्रम का लाइव प्रसारण

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सांस्कृतिक परिषद और राष्ट्रीय सेवा योजना के संयुक्त तत्त्वाधान में परीक्षा पे चर्चा कार्यक्रम में शिक्षकों और शिक्षार्थियों ने भागीदारी की. यह कार्यक्रम विश्वविद्यालय के गौर समिति कक्ष में आयोजित किया

गया. प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने परीक्षा पे चर्चा को आरम्भ करते हुए कहा कि जल, थल, नभ और अंतरिक्ष के बारे में नयी पीढ़ी जो सोचती है उसमें मुझे एक से बढ़कर एक प्रस्तुति देखने का अवसर मिला. उन्होंने कहा कि भारत मंडपम में विश्व के भविष्य की चर्चा की गई और आज यहीं भारत के भविष्य की चर्चा हो रही है. परीक्षा पे चर्चा का आरम्भ ओमान की छात्रा डेनिआ और दिल्ली स्थित बुराड़ी के छात्र मुहम्मद अर्श के प्रश्नों के साथ हुआ. परीक्षा के समय बढ़ने वाली नकारात्मकता पर प्रधानमंत्री ने अपने सुझाव देते हुए कहा कि छात्रों को हर प्रकार के दबाव से बचना चाहिए और धीरे-धीरे चीज़ों को पुनः हल करने की प्रवृत्ति को विकसित करना चाहिए. विद्यार्थियों और मित्रों के बीच परीक्षा के दौरान होने वाली प्रतिस्पर्धा पर उन्होंने अपने सुझाव देते हुए कहा कि अगर जीवन में चुनौतियाँ और स्पर्धा न हो तो चेतना और प्रेरणा का कोई महत्व नहीं है. उन्होंने कहा कि प्रतिस्पर्धा विकृत न होकर स्वस्थ हो. अध्यापक और विद्यार्थी के संबंधों पर चर्चा करते हुए कहा कि अध्यापक का कार्य सिर्फ जॉब करना नहीं है, ज़िंदगी संवारना है और वही परिवर्तन लाता है. परीक्षा के दौरान की बोझिल मानसिक स्थिति पर सुझाव देते हुए उन्होंने कहा कि परीक्षा के कुछ देर पहले अपने आप में खो जाइये और छात्रों को चाहिए कि वे पेपर और एग्जाम सेंटर की स्थिति का ख्याल छोड़ दें. उन्होंने अभिभावकों को

संबोधित करते हुए कहा कि वे परीक्षा के पहले बच्चों पर व्यर्थ का दबाव न बढ़ाएं, उन्हें परीक्षा के समय स्वतंत्र रूप से जीने और सोचने का अवसर दें. शिक्षा और व्यायाम के प्रश्न पर उन्होंने आधुनिक स्वास्थ्य विज्ञान के उदाहरणों को साझा किया. उन्होंने कहा कि स्वास्थ्य के लिए संतुलित आहार के साथ-साथ नींद बहुत आवश्यक है. विद्यार्थी मैं/मेरे जैसे स्वार्थ की भावना से ऊपर उठकर देश हित को सर्वोपरि रखे, यह हमारा सामूहिक संकल्प होना चाहिए. कार्यक्रम में छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. अम्बिका दत्त शर्मा, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस.पी. उपाध्याय, निदेशक संकाय मामले प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. मनिंदर सिंह पाहवा, डॉ. अनिल तिवारी, डॉ. संजय शर्मा, डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ.आशुतोष, डॉ. रजनीश. डॉ. नवीन सहित कई शिक्षक, राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयं सेवक एवं विद्यार्थी-शोधार्थी उपस्थित थे.

भारत राष्ट्र के पुनर्निमाण के प्रेरणास्रोत हैं राम-प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी के पुण्य स्मरण दिवस के अवसर पर डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के समाजविज्ञान शिक्षण-अधिगम केंद्र एवं दर्शनशास्त्र विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 'समय महात्मा: राम से राष्ट्र की संगति' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया. जिसमें मुख्य वक्ता प्राच्यविद एवं प्रख्यात दर्शनशास्त्री प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने अपने बीज वक्तव्य का प्रारंभ करते हुए कहा कि इस वर्ष गांधीजी की पुण्यतिथि यानी कि 30 जनवरी 2024 का यह दिन अपने साथ कई विलक्षणताएं लेकर आया है. आजादी के अमृत महोत्सव का संपन्न होना, पूरे देश के द्वारा 75 वें गणतंत्र दिवस के तौर पर प्लेटिनम जुबली का मनाया जाना एवं देश के जनमानस द्वारा गाँधी को भूलने के विरुद्ध स्वयं को खड़ा न कर पाना कुछ ऐसी ही विशेषताएं या विलक्षणताएं हैं. आज का यह दिन इसलिए भी विलक्षण है क्योंकि हाल ही में 22 जनवरी को अयोध्या में हुई राम की प्राण प्रतिष्ठा के साथ हिन्दू अस्मिता की भी प्राण प्रतिष्ठा हुई, जिसकी लड़ाई विगत पांच सौ वर्षों से लड़ी जा रही थी. और इस सु-अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री ने 'देव से देश तक और राम से राष्ट्र तक' का आह्वान करते हुए कहा कि आगामी एक हजार वर्षों तक भारत राष्ट्र के पुनर्निर्माण के प्रेरणास्रोत राम बनेगे. ये घटनाएं इस तीस जनवरी को केवल कालक्रम की दृष्टि से ही विशेष नहीं बनातीं बल्कि ये घटनाएं इस युवा देश को गंभीर विचार के लिए प्रस्थान बिंदु भी देतीं हैं. सवाल आता है कि 30 जनवरी 1948 को गाँधी जी 'हे राम' के अंतर्नोद के साथ हमलोगों से विदा क्यों हुए? इस संदर्भ में उह्न्होने हे राम शब्द के तीन अर्थों में प्रयोग पर चर्चा करते हुए बताया कि हे राम शब्द का इस्तेमाल एक तो किसी ह्रदय विरादक दृश्य को देखकर हतत्प्रद हो जाने की स्थिति में किया जाता है, दूसरा कोई गलती हो जाने पर अक्सर इस शब्द का

उपयोग किया जाता है यहाँ यह जानना भी महत्वपूर्ण है इन दोनों ही स्थितियों में से गाँधी का सम्बन्ध किसी से भी नहीं था. उनके द्वारा हे राम का अंतर्नोद एक अलग किस्म की स्थिति का परिचायक है उन्होंने भारत के भविष्य को राम से जोड़ते हुए या यूं कहें कि राम के भरोसे छोड़ने के संदर्भ में इस हे राम अंतर्नोद का इस्तेमाल किया और भारत की आजादी के आन्दोलन में उन्होंने राम को अपना आइकन बनाया. क्योंकि उनके अनुसार भारतीय संस्कृति और भारतीय सभ्यता का जितना प्रतिनिधितव राम करते हैं उतना कोई और नहीं कर सकता था. इसलिए राम भारतीयता के पर्याय हैं वे भारतीय संस्कृति और सभ्यता के आदर्शभूत हैं. इसलिए प्रधानमंत्री जी ने भी आगामी १००० वर्षों तक भारतीय राष्ट्र के पुनर्निर्माण के एक मात्र प्रेरणा स्त्रोत के तौर पर राम को ही रेखांकित किया. इस संदर्भ में उन्होंने आगे बताया कि राम सत्य, अहिंसा, धैर्य, शीलता आदि मूल्यों के प्रतीक हैं और ठीक वैसे ही गाँधी भी इन्हीं मूल्यों के पक्षधर हैं. इस संदर्भ में ही हमें राम से गाँधी की संगति और गाँधी से राष्ट्र की संगति को समझना होगा.

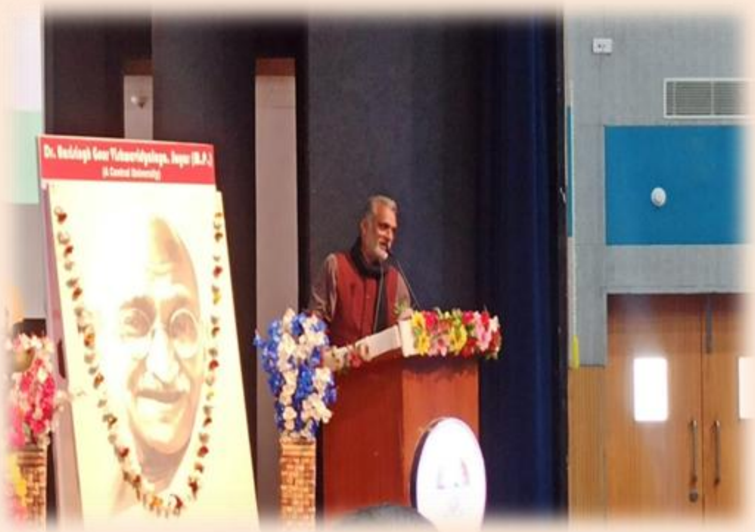

क्योंकि राम और गाँधी इन दोनों के उद्देश्यों, उनकी प्राप्ति हेतु अपनाई गई कार्य प्रणाली और मूल्यों में निसंदेह एक संगति थी. अंत में प्रो. शर्मा ने अपने वक्तव्य को सार रूप में समेटते हुए कहा कि हमारे राष्ट्र पिता को तो देश के आजाद होते ही हमारे बीच से अनुपस्थित कर दिया गया लेकिन हमें इस बात पर विचार करना होगा कि आजादी के बाद दस वर्षों तक भी अगर वे होते तो देश के विकास की दिशा क्या होती, वे उसके लिए कौन सा रास्ता निकालते? कार्यक्रम में, चीफ प्रॉक्टर डॉ. चंदा बेन, डॉ अनिल तिवारी, डॉ कालीनाथ झा, समाज विज्ञान शिक्षण-अधिगम केंद्र के समन्वयक डॉ. संजय शर्मा, मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ. आशुतोष मिश्र, विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे.

राष्ट्रीय युवा दिवस कार्यक्रम- योग शिक्षा विभाग

हम अपने जीवन में पूर्णता को पूर्णता से संपन्न करें, संपूर्णता से संपूर्णता को संपन्न करें तथा परिपूर्णता से परिपूर्णता को संपन्न करें. इसके लिए योग का जीवन में बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान हैं. कर्म ज्ञान और भक्ति के समन्वित योग से जीवन में पूर्णता संपूर्णता एवं परिपूर्णता आती है. उक्त उद्गार प्रो. भवतोष इंद्र गुरू ने योग शिक्षा विभाग डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित स्वामी विवेकानंद जयंती तथा राष्ट्रीय युवा दिवस कार्यक्रम में अध्यक्षीय उद्बोधन में व्यक्त किए. विशिष्ट अतिथि आर्मी पब्लिक स्कूल की प्राचार्य ज्योति दुबे ने इस अबसर पर कहा कि आधुनिक समय में विवेकानंद की शिक्षाओं का क्या महत्त्व है यह समझना आवश्यक है. विवेकानंद का ईश्वर में गहरा विश्वास था परंतु ईश्वर सभी को नही मिलता, इस पर विवेकानंद ने कहा ईश्वर विश्वास का विषय है. धर्म जाति संप्रदाय की विविधता के बावजूद भारत में ईश्वर की उपस्थिति सभी ने स्वीकार करी है. विवेकानंद के जीवन से हम आत्म विश्वास की प्रेरणा पाते है क्योंकि अमेरिकी धर्म सभा में विश्व के तत्कालिन दिग्गज धर्मगुरूओं के सामने निर्भिक होकर अपनी बात रखना उनके आत्मबल और आत्म विश्ववास का परिचय है. वे केवल 39 वर्ष तक धरा पर रहे. युवावस्था निर्माण की अवस्था कहलाती है. यह विवेकानंद के जीवन वृत्त से पता चलता है कि जब

युवा वर्ग विचलन के कारण पथ भ्रमित होता है उस काल में योग को अपनाकर विवेकानंद सबसे लिए आदर्श बने. इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय अमरकंटक के योग विभाग के प्राध्यापक डॉ. संदीप ठाकरे ने कहा कि योग में गुरू कृपा का विशेष महत्त्व है. इसी गुरूकृपा की बदौलत एवं समर्पण से ही विवेकानंद विश्व पटल पर पूज्य बने. वे नास्तिक थे और ब्रह्म समाज के अनुयायी बनें परंतु बाद में गुरू का सान्निध्य पाकर के युग दृष्टा एवं युग प्रवर्तक बन गया थे.

कार्यक्रम के प्रारंभ में डॉ. नितिन कोरपाल ने सामूहिक सूर्य नमस्कार का अभ्यास कराया स्वागत भाषण तथा विभागीय गतिविधियों से डॉ. अरूण कुमार साव ने परिचय कराया। अंशिका एवं कृति ने नृत्यबद्ध सरस्वती वंदना प्रस्तुत की. संचालन दर्शन यादव तथा यशी यादव ने तथा आभार ज्ञापन डॉ. ब्रजेश ठाकुर ने माना. इस अवसर पर विद्यार्थीयों ने योगासनों की प्रस्तुति भी दी.

परमार्थ दर्शन तथा शैव दर्शन में गहरा संवाद अन्तर्निहित है - आचार्य राधावल्लभ त्रिपाठी

डॉ.हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय,सागर (म.प्र.) एवं भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद्,नई दिल्ली के संयुक्त तत्त्वावधान में विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में केन्द्रीय संस्कृत वि.वि.नई दिल्ली के पूर्व

कुलपति एवं भारतीय दार्शनिक अनुसन्धान परिषद्,नई दिल्ली के राष्ट्रीय अध्येता प्रख्यात संस्कृतविद् प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी का "परमार्थ दर्शन तथा शैव दर्शन" विषय पर सारस्वत व्याख्यान आयोजित किया गया.

कार्यक्रम की अध्यक्षता माननीया कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता ने की. व्याख्यान का विषय प्रवर्तन करते हुए दर्शन विभाग के अध्यक्ष प्रो.अम्बिकादत्त शर्मा ने परमार्थ दर्शन एवं शैव दर्शन की आधारभूत रूपरेखा पर प्रकाश डाला. सारस्वत उद्बोधन में प्रो.राधावल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि उन्नीसवीं शताब्दी के महानतम् दार्शनिक रामावतार शर्मा परमार्थ दर्शन के स्वतंत्र दार्शनिक सिद्धांत के प्रस्तोता आचार्य हैं, उनके तीन प्रमुख दार्शनिक सिद्धांत हैं सर्वात्मकतावाद, विश्ववैचित्र्यवाद एवं देहात्मवाद. सर्वात्मकसत्ता में सबकुछ समवेत होता है देह और आत्मा अविभाज्य होते हैं. वे सर्वात्मक सत्ता के पीछे, विश्ववैचित्र्य को मानते हैं. पंडित रामावतार शर्मा जगत को भी परमार्थ मानते हुए जगत को व्याघात से रहित मानते हैं. शैव दर्शन को

व्याख्यायित करते हुए प्रो. त्रिपाठी ने कहा की शैव दर्शन के अनुसार सम्पूर्ण जगत शिवशक्तिमय है. शिव की शक्ति के द्वारा जगत की रचना होती है. उन्होंने कहा कि पंडित रामावतार शर्मा के परमार्थ दर्शन में शैव दर्शन की तत्त्वमीमांसा एवं ज्ञानमीमांसा का अन्तर्निहित स्वरुप दिखाई पड़ता है. यद्यपि रामावतार शर्मा अपने परमार्थ दर्शन के प्रतिपादन में मौन दिखलाई पड़ते हैं, उन्हें प्रछान्न शिवानुयायी कहा जा सकता है.

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो.नीलिमा गुप्ता ने कहा कि भारतीय ज्ञान परम्परा की आवश्यकता न सिर्फ भारत को है बल्कि पूरे विश्व को इसकी आवश्यकता है. परमार्थ दर्शन एवं शैव दर्शन भारतीय ज्ञान परम्परा के महत्वपूर्ण सिद्धांत हैं.

भारतीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा को पुनर्स्थापित किया जा रहा है हम सभी भारतीयों का यह नैतिक दायित्व है कि परमार्थ दर्शन एवं शैव दर्शन सदृश भारतीयता मूल्यनिष्ठ सिद्धांतों का पुनर्चिन्तन एवं मनन करें. कार्यक्रम के संयोजक प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कार्यक्रम के आरंभ में स्वागत उद्बोधन दिया तथा संस्कृत विभाग के शिक्षकों द्वारा शाल श्रीफल स्मृति चिह्न से अतिथियों का सम्मान किया गया. अभिनंदन-पत्र का वाचन डॉ. नौनिहाल गौतम ने किया. कार्यक्रम का संचालन डॉ. शशिकुमार सिंह ने किया तथा आभार ज्ञापन डॉ. संजय कुमार ने किया. इस अवसर पर प्रो. संतोष शुक्ला, प्रो. ए.पी.मिश्रा, प्रो. जी.एल.पुणताम्बेकर, प्रो. चंदा बेन, प्रो. राजेंद्र यादव, प्रो. विजय वर्मा, डॉ. अनिल तिवारी, डॉ. नौनिहाल गौतम, डॉ. रामहेत गौतम, डॉ. किरण आर्या, डॉ. ऋषभ भरद्वाज, डॉ. सुखदेव वाजपेयी, डॉ. अरविन्द कुमार, डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय, डॉ. सुजाता मिश्रा, डॉ. हिमांशु कुमार, डॉ. अभिज्ञान द्विवेदी, डॉ. धर्मेन्द्र सर्राफ, डॉ. अभिषेक प्रजापति, डॉ. सत्यनारायण देवलिया, डॉ.रामरतन पाण्डेय, डॉ.गजाधर सागर, डॉ. शरद सिंह, टीकाराम त्रिपाठी, डॉ.आशीष द्विवेदी सहित विश्वविद्यालय के शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में मौजूद रहे.

----------//----------

नए वर्ष में हम सभी आयामों पर और अधिक ऊर्जा के साथ कार्य करेंगे : कुलपति गुप्ता

भास्कर संवाददाता | सागर

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने विश्वविद्यालय की वर्ष 2023 की उपलब्धियों को सांझा करते हुए कहा कि हम डॉ. गौर द्वारा स्थापित ज्ञान के मंदिर में नित नए नवाचारी कार्य कर रहे हैं। एक तरफ जहां भवनों, छात्रावासों और अन्य ढांचागत सुविधाओं का विकास हो रहा है वहीं शैक्षणिक, गैर शैक्षणिक पदों पर भी नियुक्तियां जारी हैं। आने वाले नए वर्ष में हम सभी आयामों पर और अधिक ऊर्जा के साथ कार्य करेंगे और सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग और उच्चतम ग्रेड प्राप्त विश्वविद्यालयों की श्रेणी में शुमार होंगे। विश्वविद्यालय के शिक्षक, कर्मचारी, अधिकारी, विद्यार्थी लगातार इस दिशा में कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि सागर शहर एवं बुंदेलखंड अंचल के गणमान्य नागरिकों का भी अपार सहयोग और स्नेह विश्वविद्यालय को लगातार मिल रहा है। निश्चित ही हम राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय मानक के संस्थान बनेंगे। विश्वविद्यालय प्रशासन ने बताया है कि इस दौरान पुस्तकालय परिसर में मुक्ताकाशी अध्ययन केंद्र का निर्माण हुआ। चार दिवसीय पुस्तक मेले में विद्यार्थी और शिक्षकों द्वारा पुस्तकालय के लिए पुस्तकें चुनीं गईं। स्वास्थ्य केंद्र द्वारा निशुल्क स्वास्थ्य शिविर लगाया गया। गौर जयंती पर शहर स्थित गौर अध्ययन केंद्र में साप्ताहिक स्वास्थ्य परीक्षण केंद्र की शुरुआत की गई। सेना के साथ एमओयू भी हुआ। शिक्षकों, विद्यार्थियों, कर्मचारियों ने भी कई बड़ी उपलब्धियां हासिल की हैं।

विवि : पीजी के 38 पाठ्यक्रमों की 1806 सीटों पर प्रवेश पंजीयन शुरू

एडमिशन प्रक्रिया : नेशनल टेस्टिंग एजेंसी ने जारी किया शेड्यूल

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के सत्र 2024-25 में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए प्रक्रिया शुरू हो गई है। विश्वविद्यालय में स्नातक के 38 पाठ्यक्रमों में 1806 सीटें हैं। एनटीए यानी नेशनल टेस्टिंग एजेंसी ने कॉमन यूनिवर्सिटी एंट्रेंस टेस्ट-2024 पोस्ट ग्रेजुएशन के लिए पंजीयन शुरू कर दिए हैं। डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने के इच्छुक विद्यार्थी सीयूईटी की ऑफिशियल वेबसाइट पर जाकर फॉर्म भर सकते हैं। सीयूईटी पीजी 2024 के लिए आवेदन भरने की अंतिम जनवरी 24 जनवरी 2024 है।

करेक्शन विंडो 27 जनवरी के दिन खुलेगी और 29 जनवरी 2024 तक खुली रहेगी। विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों की मदद के लिए संचालित साथी ग्रुप ने एडमिशन को लेकर अपने हेल्पलाइन नंबर भी जारी कर दिए हैं। ग्रुप के शुभांक चाचोंदिया ने बताया विश्वविद्यालय मे स्नातकोत्तर मे प्रवेश संबंधित जानकारियों के लिए हम अपने सोशल मीडिया ग्रुप के माध्यम से भी विद्यार्थियों की मदद कर रहे हैं। विश्वविद्यालय में यूजी के 14 कोर्स में 14 पिछले साल 2253 सीट थीं। इन पर प्रवेश के लिए पंजीयन शुरू होने की जानकारी फिलहाल एंटीए ने जारी नहीं की है।

एडमिट कार्ड 7 मार्च को होंगे जारी, 11 से 28 मार्च के बीच होगी परीक्षा सीयूईटी पीजी परीक्षा 2024 के लिए एडवांस सिटी इंटीमेशन स्लिप 4 मार्च के दिन रिलीज होगी। वहीं एडमिट कार्ड 7 मार्च 2024 को जारी होंगे। परीक्षा 11 से 28 मार्च के बीच होगी। आंसर-की 4 अप्रैल को जारी होगी। दो पेपरों तक के लिए आवेदन करने के लिए जनरल कैटेगरी का शुल्क 1200 रुपए है। वहीं ओबीसी, जनरल ईडब्ल्यूएस के लिए शुल्क 1000 रुपए है। एससी, एसटी व थर्ड जेंडर के लिए शुल्क 900 रुपए निर्धारित किया गया है। जबकि पीएच यानी दिव्यांग कैटेगरी के लिए शुल्क 800 रुपए तय किया गया है। फीस ऑनलाइन सबमिट की जा सकती है। इसके लिए डेबिट कार्ड, क्रेडिट कार्ड, नेट बैंकिंग कोई भी तरीका इस्तेमाल कर सकते हैं।

ऐसे कर सकते हैं विद्यार्थी ऑनलाइन आवेदन

1. आवेदन करने के लिए सबसे पहले आधिकारिक वेबसाइट पर जाएं यानी pgcuet.samarth.ac.in पर जाएं। होमपेज पर विद्यार्थियों को रजिस्ट्रेशन लिंक दिखेगा। जहां लिखा होगा- CUET PG 2024 Registration Link.
2. इस पर क्लिक करें। ऐसा करते ही एक नया पेज खुल जाएगा।
3. यहां खुद को रजिस्टर करें और रजिस्ट्रेशन के बाद अपने एकाउंट में लॉगिन करें।
4. अब सबमिट पर क्लिक करें और पेज डाउनलोड कर लें। इसकी हार्डकॉपी निकालकर आगे के लिए रख लें।

भारत विकास पथ पर आगे बढ़ने तैयार : डॉ. पुणताम्बेकर

सागर @ पत्रिका. भारत अपने विकास पथ पर आगे बढ़ने को तैयार है, भारत 2047 तक अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी के समय तक राष्ट्र को एक विकसित इकाई में बदलने की भारत सरकार की महत्वाकांक्षी दृष्टि का प्रतिनिधित्व कर रहा हैं। इसमें आर्थिक समृद्धि, सामाजिक उन्नति, पर्यावरणीय स्थिरता और प्रभावी शासन अपने महत्वपूर्ण मोड़ पर खड़ा है तथा विकास पथ पर आगे बढने के लिए तैयार है।

यह बात डॉ. हरिसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय के डॉ. जीएल पुणताम्बेकर ने गर्ल्स डिग्री कॉलेज में आयोजित शैक्षणिक गुणवत्ता, नवाचार व कौशल विकास के तहत 'आर्थिक क्षेत्र के नए बदलाव' विषय पर आयोजित विशेष व्याख्यान में कही। उन्होंने कहा कि यह महसूस करना महत्तपूर्ण है कि दृढ़ नेतृत्व के साथ भारत की निष्ठा में सभी का विश्वास हमारी क्षमता को साकार करता है। भारत के विकास पथ को दर्शाती हुई गुजरात की गिफ्ट सिटी इसका ज्वलंत उदाहरण है, जिसमें दुनिया के प्रत्येक क्षेत्रों से आए लोगों को आर्थिक लाभ मिलेगा।

व्याख्यान माला की अध्यक्षता कर रहे प्राचार्य डॉ. आनंद तिवारी ने कहा इस प्रकार के आयोजन से छात्राओं में नवाचार का संचार होगा जो कि भविष्य में उन्हें आगे बढ़ने में सहायक सिद्ध होगा। संचालन डॉ. सीमा दांगी ने किया। इस अवसर पर वाणिज्य विभागाअध्यक्ष डॉ. एसएल साहू, प्राध्यापक डीके गुप्ता, शक्ति जैन, एमएम चौकसे, निशाइन्द्र गुरू, अंजना चतुर्वेदी, डॉ. रश्मि माथुर, डॉ. मोनिका हार्डिकर सहित बड़ी संख्या में छात्राएं उपस्थित थीं।

विश्वविद्यालय : प्लेसमेंट सेल के प्रभारी प्रो. पुणतांबेकर ने बताया एक अन्य ड्राइव के लिए भी चल रहे पंजीयन

फरवरी में प्लेसमेंट ड्राइव, तैयारी के लिए एक्सपर्ट ने दिए टिप्स

भास्कर संवाददाता|सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट सेल द्वारा स्नातक और स्नातकोत्तर कक्षाओं के अंतिम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए प्लेसमेंट ड्राइव के पहले लाइफ स्किल और सॉफ्ट स्किल के लिए तीन दिवसीय ट्रेनिंग कराई गई। विवि के अभिमंच सभागार, वाणिज्य और अर्थशास्त्र विभाग में यह ट्रेनिंग हुई।

यह ट्रेनिंग पूना की एक कंपनी और विवि के प्लेसमेंट सेल के तहत हुए एक एमओयू के तहत किया गया। कंपनी ने अपने 4 ट्रेनर सागर भेजे थे। जेनिब खान, परिधि पांडे, अनिरुद्ध पांठक और यश चौहान ने 5 सत्रों में रोल प्ले, केस स्टडी, फ्री स्पीच, मोक ई-मेल, मोक कॉल्स, ग्रुप एक्टिविटी और मोक इंटरव्यू के माध्यम से ट्रेनिंग में शामिल हुए 170 विद्यार्थियों को उनकी डिग्री पूरी होने के बाद कैंपस ड्राइव के लिए तैयार करने का काम किया। अन्य जरूरी टिप्स भी दिए गए। प्लेसमेंट सेल प्रभारी प्रो. जीएल पुणतांबेकर ने बताया अब इन प्रशिक्षित विद्यार्थियों को फरवरी माह से प्लेसमेंट ड्राइव में शामिल किया जाएगा। इसके अलावा 12 जनवरी को अजीम प्रेमजी फाउंडेशन का प्लेसमेंट ड्राइव भी होगा। जिसके लिए हिंदी, अंग्रेजी, अर्थशास्त्र, समाजशास्त्र, वनस्पति शास्त्र, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान, गणित, राजनीति शास्त्र, इतिहास और मनोविज्ञान विषय के अंतिम सेमेस्टर के विद्यार्थियों के ऑनलाइन पंजीयन जारी हैं, जो प्लेसमेंट सेल के विभाग प्रभारियों के माध्यम या टेलीग्राम चैनल से गूगल लिंक के माध्यम से किए जा सकते हैं। ट्रेनिंग कार्यक्रम के समापन सत्र की अध्यक्षता डोआ प्रो. नवीन कानगो ने की।

विद्यार्थियों ने ट्रेनिंग कार्यक्रम के बारे में अपने अनुभव साझा किए। ट्रेनर ने बताया सबसे महत्वपूर्ण बात यह निकलकर आई कि सागर विश्वविद्यालय के विद्यार्थी योग्य और प्रतिभाशाली हैं। इस प्रकार की ट्रेनिंग से उनके अकादमिक और व्यवसायिक कॅरियर में बड़ा उछाल आएगा। उन्होंने प्लेसमेंट सेल की छात्र समिति की सक्रियता की भी सराहना की। ट्रेनर परिधि पांडे ने फरवरी में कुछ कंपनियों के लिए कैंपस ड्राइव करने का भी प्रस्ताव दिया। प्रो. कानगो ने कहा अब विश्वविद्यालय की प्लेसमेंट पॉलिसी के तहत ऐसे आयोजनों में उपस्थित विद्यार्थियों को अपनी कक्षाओं की उपस्थिति में शामिल किया जाता है। लिहाजा उनकी सहभागिता अधिक होनी चाहिए। चारों ट्रेनर को प्लेसमेंट प्रभारी प्रो. पुणतांबेकर ने स्वयं की बनाई पेंटिंग भेंट कीं। संचालन प्लेसमेंट सेल की छात्र समिति की शांभवी सरवैया ने किया।

आयोजन । सावित्रीबाई फुले द्वारा बालिका शिक्षा के क्षेत्र में किया गया कार्य निःसन्देह सराहनीय है

जन्म जयंती पर लड़कियों की शिक्षा विषय पर ऑनलाइन व्याख्यान आयोजित

सागर, आचरण संवाददाता।

भारत की पहली महिला अध्यापिका क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले की 193 वीं जन्म जयंती के अवसर पर डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के समाजविज्ञान शिक्षण अधिगम केंद्र द्वारा सावित्रिबाई फुले की प्रतिमा पर माल्यार्पण कार्यक्रम एवं राष्ट्रीय व्याख्यान श्रृंखला के तहत ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसका विषय लड़कियों की शिक्षा- शिक्षा विमर्श में एक अचर्चित विषय था। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता शिक्षाविद व नारीवादी विमर्शकार प्रोफ़ेसर साधना सक्सेना ने अपने बीज वक्तव्य में बताया कि आज से करीब पौने दो सौ साल पहले तत्कालीन प्रचलित धारा के विरुद्ध जाकर सावित्रीबाई फुले द्वारा बालिका शिक्षा के क्षेत्र में किया गया कार्य निःसन्देह सराहनीय है।

वर्ष 2005 से 2007 के बीच मध्यप्रदेश में किये गए एक राज्यव्यापी, सूक्ष्म व जमीनी अनुभवों पर आधारित गुणात्मक अध्ययन के हवाले से उन्होंने लड़कियों की शिक्षा से जुड़े तमाम सरोकारों का एक चित्र प्रस्तुत किया। इस संदर्भ में उन्होंने बताया कि आदिवासी व दलित समाजों में लड़कियों की शिक्षा को लेकर माता और पिता के दृष्टिकोण में भिन्नता पाई गई, पुरुषों की अपेक्षा इन समाजों की महिलाओं में अपनी लड़कियों की शिक्षा को लेकर समर्थन अधिक देखने को मिला, लेकिन किसी भी समस्या के आते ही इन बालिकाओं की शिक्षा बीच में ही छूट जाने का खतरा भी लगातार बना रहा और अभी भी बना रहता है क्योंकि इनकी शिक्षा के मार्ग में कई अवरोध हैं जिनमें से छेड़खानी एक मुख्य अवरोध के रूप में हमारे सामने आता है यह न केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक ही सीमित है बल्कि शहरी इलाकों तक भी व्यापक है और इन दोनों ही जगहों घर से विद्यालय की दूरी इसका सबसे बड़ा कारण है जो उन बालिकाओं को हर क्षण असुरक्षा का अहसास कराता है। जिसका असर लड़कियों में डर, पढ़ाई से ध्यान हटना एवं उनकी खराब शैक्षिक निष्पत्ति के तौर पर हमें देखने को मिलते हैं। प्रो. सक्सेना ने आगे बताया कि लड़कों या पुरुषों के व्यवहार का समाज द्वारा किया गया यह सामान्यीकरण कि 'लड़के तो लड़के हैं वे तो ऐसा करेंगे ही तुम लड़कियों को बचकर चलना चाहिए' लड़कियों के साथ हो रहे इस तरह के अनावश्यक और अप्रिय व्यवहार को बढ़ावा देने और उसका वैधीकरण करने का सबसे सशक्त साधन है जिसे बदलने की आवश्यकता है, क्योंकि इस तरह के अभ्यास इतनी मजबूती के साथ लड़कियों पर ही दोषारोपण करते हैं कि वे खुद भी इस बात को स्वीकार कर बैठती हैं सारी गलती उनकी ही है। यह एक बहुत ही विपरीतार्थक स्थिति है कि एक ओर तो लड़कियों को आगे बढ़ना उनको पढ़ना चाहते हैं और दूसरी इस तरह की सामाजिक जकड़नों को तोड़ने के बजाय संस्थागत समाजीकरण के जरिये उन्हें और अधिक मजबूत करते हैं जो बालिकाओं के आत्मविश्वास को लगातार कम करती हैं। अंत में उन्होंने इस बात की ओर ध्यान आकृष्ट किया कि नारीवादी विमर्श केवल महिलाओं से सम्बन्धित सरोकारों पर ही केन्द्रित नहीं होना चाहिए बल्कि इसमें पुरुषों के मनोभावों, उनकी अभिव्यक्तियों, कुंठाओं पर ही उतनी ही संवेदनशीलता और बारीकी से ध्यान दिया जाना चाहिए ताकि महिलाओं व पुरुषों के बीच एक सौहार्द्रपूर्ण रिश्ता बन सके जिकी नारीवादी विमर्श बात करता है। कार्यक्रम की अंतिम बेला में शिक्षाशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष प्रोफेसर अनिल कुमार जैन ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रोफ़ेसर सक्सेना के वक्तव्य की सराहना करते हुए कहा कि इस तरह के आयजन विद्यार्थियों, शोधार्थियों, शिक्षकों और अंततः समाज को चिंतन की एक नवीन दिशा देते हैं और आज का यह आयोजन अपने इस मकसद में सफल कहा जा सकता है। प्रो. जैन ने आगे बताया कि महिला शिक्षा, महिला समानता और महिला सशक्तीकरण को हम शिक्षकों को एक अलग दृष्टिकोण से देखना होगा। और इस क्रम में हमें उनको जीवन जीने की, समाज में स्वयं को स्थापित करने की, आगे बढ़ने की, समाज की संस्कृति को समझने की, परिवार और समाज के बीच के रिश्ते की, और इससे भी ऊपर उठकर राष्ट्र के साथ परिवार और समाज के सम्बन्धों की शिक्षा देनी होगी। ताकि महिलाओं और पुरुषों को किसी विभेदात्मकरूप से नहीं बल्कि मानव के तौर एक समग्र व्यक्तित्व के रूप में समझा और स्वीकारा और समझा जा सके। कार्यक्रम के अंत में प्रोफेसर बी.के. श्रीवास्तव द्वारा औपचारिक आभार व्यक्त किया गया सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन डॉ. आफरीन खान ने किया। इसके अलावा कार्यक्रम में समाजविज्ञान शिक्षण अधिगम केन्द्र के समन्वयक डॉ. संजय शर्मा, विश्वविद्यालय के छात्र कल्याण अधिष्ठाता एवं प्रख्यात दर्शनशास्त्री प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा, मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी उपस्थित थे।

सावित्रीबाई फुले की 193वीं जयंती पर डॉ. हरिसिंह विवि में व्याख्यान का आयोजन

लड़कियों की शिक्षा में सबसे बड़ा अवरोध छेड़खानी, यह शहर-गांव हर जगह: प्रो. साधना

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. भारत की पहली महिला अध्यापिका क्रांतिज्योति सावित्रीबाई फुले की 193वीं जन्म जयंती पर डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय समाजविज्ञान शिक्षण अधिगम केंद्र द्वारा ऑनलाइन व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसका विषय "लड़कियों की शिक्षा, शिक्षा विमर्श में एक अचर्चित विषय" था।

कार्यक्रम की मुख्य वक्ता शिक्षाविद व नारीवादी विमर्शकार प्रो. साधना सक्सेना ने कहा करीब पौने दो सौ साल पहले तात्कालीन प्रचलित धारा के विरुद्ध जाकर सावित्रीबाई फुले द्वारा बालिका शिक्षा के क्षेत्र में किया गया कार्य निःसन्देह सराहनीय है। आदिवासी व दलित समाजों में लड़कियों की शिक्षा को लेकर माता और पिता के दृष्टिकोण में भिन्नता पाई गई, पुरुषों की अपेक्षा इन समाजों की महिलाओं में अपनी लड़कियों की शिक्षा को लेकर समर्थन अधिक देखने को मिला, लेकिन किसी भी समस्या के आते ही इन बालिकाओं की शिक्षा बीच में ही छूट जाने का ख़तरा भी लगातार बना रहा और अभी भी बना रहता है। क्योंकि इनकी शिक्षा के मार्ग में कई अवरोध हैं। जिनमें से छेड़ख़ानी एक मुख्य अवरोध के रूप में हमारे सामने आता है। यह न केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक ही सीमित है बल्कि शहरी इलाकों तक भी व्यापक है। इन दोनों ही जगहों घर से विद्यालय की दूरी इसका सबसे बड़ा कारण है जो उन बालिकाओं को हर क्षण असुरक्षा का अहसास कराता है।

शिक्षाशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. अनिल कुमार जैन ने कहा, महिला शिक्षा, महिला समानता और महिला सशक्तीकरण को हम शिक्षकों को एक अलग दृष्टिकोण से देखना होगा। इसी क्रम में हमें उनको जीवन जीने की, समाज में स्वयं को स्थापित करने की, आगे बढ़ने की, समाज की संस्कृति को समझने की, परिवार और समाज के बीच के रिश्ते की और इससे भी ऊपर उठकर राष्ट्र के साथ परिवार और समाज के संबंधों की शिक्षा देनी होगी। ताकि महिलाओं और पुरुषों को किसी विभेदात्मकरूप से नहीं बल्कि मानव के तौर एक समग्र व्यक्तित्व के रूप में समझा और स्वीकारा और समझा जा सके। संचालन डॉ. आफरीन खान व आभार प्रो. बीके श्रीवास्तव ने व्यक्त किया। कार्यक्रम में समाजविज्ञान शिक्षण अधिगम केंद्र के समन्वयक डॉ. संजय शर्मा, विवि छात्र कल्याण अधिष्टाता प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा, मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल सहित विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, शोधार्थी व विद्यार्थी उपस्थित थे।

पीएचडी छात्र इशफाक अब्दुल्ला वानी को पुरस्कार

जागरण, सागर। डॉ.हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के रसायन विज्ञान विभाग में पीएचडी छात्र इशफाक अब्दुल्ला वानी को 21वें राष्ट्रीय सम्मेलन में दूसरे पोस्टर पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इस सम्मेलन का आयोजन पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़ द्वारा किया गया था। इशफाक आयनिक तरल पदार्थों के माध्यम से ऊर्जा कुशल पेरोव्स्काइट नैनोमटेरियल्स पर काम कर रहे हैं और उन्होंने नैनोकणों के हरित संश्लेषण और जहरीले कार्बनिक रंगों क्रिस्टल वायलेट के क्षरण में उनके अनुप्रयोगों को विकसित किया है। विभाग के प्रमुख प्रो.एपी मिश्रा, डॉ.पुष्पल घोष, प्रो.विजय वर्मा, अन्य संकाय सदस्यों, कर्मचारियों और शोध विद्वानों ने इशफाक को इस उपलब्धि के लिए बधाई दी।

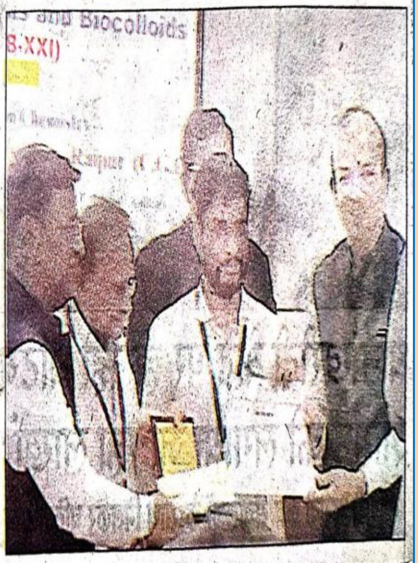

आयोजन

लेखांकन पेशा मनुष्य की जीवन शैली है

वाणिज्य विभाग के विद्यार्थी कभी बेरोजगार नहीं रहतेः जैन

सागर, आचरण संवाददाता।

वाणिज्य विभाग डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में बी.कॉम एम.कॉम के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए लेखांकन पेशे के अंतर्गत करियर संभावनाओं पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। उस सेमिनार के मुख्य वक्ता वाणिज्य विभाग के 1994 -97 छत्र रहे वर्तमान का रामजी नायक रहे।

चार्टर्ड अकाउंटेंट प्रैक्टिशनर रामजी नायक आज अपने धर्मपत्नी सुश्री मानसी नायक के साथ पधारकर छात्रों को महत्वपूर्ण ज्ञान बिंदु प्रदान किए। रामजी नायक ने बताया कि जीएसटी की कर दरों को अतिरिक्त बुलियन एवं गहनों पर 3त्र का जीएसटी निर्धारित किया गया। अपने आगे बताया कि भारत में विकसित वस्तुओं पर शेष की दर 12 प्रतिशत से 160 प्रतिशत तक है। अर्थात जिन वस्तुओं पर जीएसटी नहीं लगता उन पर सेस का निर्धारण किया जा सकता है। आपने अपने उद्बोधन में बताया कि मैन्युफैक्चरिंग इकाई पर आजीवन आयकर की दर 17.16 प्रतिशत निर्धारित की गई है। व्यक्तिगत करदाताओं की चर्चा करते हुए अपने स्पष्ट किया की नई एवं पुरानी कर व्यवस्था में नई कर व्यवस्था छोटे करदाताओं तथा उन वेतन भोगी करदाताओं के लिए लाभकारी है जो भविष्य के लिए विनियोग की क्षमता नहीं रखते। उनके कर दर में भी अंतर है। रामजी नायक ने बताया कि व्यक्तिगत वेतनभोगी करदाता न्यू कर प्रणाली से पुरानी कर प्रणाली में एवं पुरानी से नई कर प्रणाली में प्रतिवर्ष बदलाव कर सकते हैं, जबकि अन्य करदाता ऐसा नहीं कर सकते। अन्य करदाता एक बार यदि कोई कर प्रणाली चुनते हैं तो उन्हें 5 वर्ष उसी स्कीम में रहना होगा।

अतिथि वक्ता ने विद्यार्थियों को रोजगार के लिए प्रेरित करते हुए बताया कि बीकॉम छत्र जीएसटी एवं आयकर की प्रैक्टिस कर सकते हैं, अपील एवं अपीलीय प्राधिकरण में पक्षवार की ओर से उसका पक्ष रखने के लिए अर्हवारी मान्य है। अतिथि वक्ता ने बताया की ई-कॉमर्स एवं अन्य व्यावसायिक कर दरें समान है। विभाग अध्यक्ष प्रोफेसर जे.के. जैन ने कहा कि वाणिज्य विभाग के विद्यार्थी कभी बेरोजगार नहीं रहते। उन्होंने बताया कि वाणिज्य एक जीवन शैली विषय है, अतः प्रत्येक व्यक्ति वाणिज्य सुगमन करता है। विभाग के प्रोफेसर मानवेंद्र सिंह पाहवा ने बताया कि करियर के लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए समयबद्धता एवं अनुशासन महत्वपूर्ण वाहक है। चार्टर्ड अकाउंटेंट रामजी नायक से छात्रों ने अनेक प्रश्न किए जिनमें उन्होंने संतोषजनक जवाब दिया तथा छात्रों को करियर के लिए वाणिज्य एवं लेखांकन चुनने पर बधाई दी। आपने अपनी सी.ए. की जीवन यात्रा पर ही प्रकाश डाला। कार्यक्रम के आरंभ में मां सरस्वती एवं डॉक्टर गौर के समक्ष दीप प्रज्वलन किया गया।

कार्यक्रम का संचालन भव्यता एवं हर्षित जैन ने किया। मुख्य वक्ता का परिचय शोधार्थी हर्षित जैन ने किया। कार्यक्रम में लगभग 120 विद्यार्थी, शिक्षक डॉ. अनिता कुमारी, डॉ. सुषमा यादव, डॉ. पुष्पा सूर्यवंशी, प्रो. मनविंदर सिंह पाहवा एवं एवं प्रो. जेके जैन। शोधार्थी लोकेंद्र, अदिति स्वामी, सुभाष गुप्ता, अंकित चौरसिया, गरिमा दोहर, पर्णवी निगानिया, सारांश कुमार श्रीवास्तव, पूजा ठाकुर, शिल्पा इक्का, महिमा हाबिल, गुरुदामन श्रीवास्तव आदि थे। धन्यवाद् एमकॉम के विद्यार्थी संस्कार जैन ज्ञापित ने किया।

खेल

72 विवि के प्रतिभागी होंगे शामिल, कुलपति ने निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का लिया जायजा

वेस्ट जोन हैंडबाल प्रतियोगिता कल से होगी शुरू

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में एआईयू वेस्ट जोन हैंडबाल (पुरुष)प्रतियोगिता का आयोजन 10 से 13 जनवरी तक किया जाएगा। इस प्रतियोगिता में पश्चिम क्षेत्र की 72 विश्वविद्यालय प्रतिभागिता कर रहे हैं।

कुलपति प्रो. नीलिम्मा गुप्ता ने आयोजन के संबंध में जानकारी देते हुए कहा कि यह हर्ष का विषय है कि विवि के तत्त्वावधान में शारीरिक शिक्षा विभाग द्वारा चार दिवसीय हैंडबाल (पुरुष) प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। विवि में पिछले दो वर्षों से लगातार पश्चिम क्षेत्र की प्रतियोगिताएं आयोजित हो रही हैं। शारीरिक शिक्षा विभाग में इसी वर्ष से चार वर्षीय पाठ्यक्रमी प्रारंभ कर दिए हैं। उन्होंने कहा कि खेल शरीर को स्वस्थ रखने का एक अच्छा माध्यम है। मन, मस्तिष्क और शरीर तीनों का स्वास्थ्य बेहतर होता है। इसलिए खेल से जुड़े रहना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति में खेल की भावना भी होनी चाहिए। उन्होंने ग्राउंड और स्टेडियम परिसर का निरीक्षण कर तैयारियों का जायजा लिया। उन्होंने सभी व्यस्थाएं सुनिश्चित करने हेतु सभी संबंधितों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। बताया जा रहा है इस कार्यक्रम में पूर्व अंतर्राष्ट्रीय हाकी खिलाड़ी मीर रंजन नेगी भी शामिल होंगे। शारीरिक शिक्षा विभाग के निदेशक डा. विवेक बी. साठे ने 10 से 13 जनवरी 2024 तक चलने वाली प्रतियोगिता के बारे में जानकारी देते हुए विभिन्न पूल मैच और अन्य तकनीकी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि मानदंड के अनुसार निर्णायक मंडल को भी आमंत्रित किया गया है। सभी प्रतियोगी टीम के आवास-भोजन इत्यादि की व्यवस्था विश्वविद्यालय परिसर में की गई है।

विवि खेल मैदान में चल रही व्यवस्थाओं का जायजा लेती हुई कुलपति प्रो . नीलिमा गुप्ता। • नवदुनिया

अंतरविश्वविद्यालय खेल प्रतियोगिताएं पूर्व में भी हुई हैं

डा. साठे ने बताया कि प्रतियोगिता में 72 विवि की टीमें शामिल हो रही हैं। विवि खेल परिसर में वर्ष 2002 में बैडमिन्टन, 2010-11 में टेबल-टेनिस, 2011-12 में हाकी एवं बालीवाल 2023में खो-खो अंतर-विवि प्रतियोगिता का आयोजन सफलतापूर्वक किया जा चुका है। इसके साथ ही 2015-16 में अंतर-विवि क्रिकेट प्रतियोगिता का भी आयोजन किया जा चुका है।

पिछले दो वर्षों ने खो-खो प्रतियोगिता भी आयोजित की जा रही थी। एआईयू वेस्ट जोन हैंडबाल (पुरुष)प्रतियोगिता10 से 13 जनवरी, 2024 तक का यह आयोजन कई मायने में महत्त्वपूर्ण है।

करियर संभावनाओं पर सेमिनार का आयोजित किया

सागर। वाणिज्य विभाग डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर में बी.कॉम एम.कॉम के विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों के लिए लेखांकन पेशे के अंतर्गत करियर संभावनाओं पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। उस सेमिनार के मुख्य वक्ता वाणिज्य विभाग के छत्र रहे। चार्टर्ड अकाउंटेंट प्रैक्टिशनर रामजी नायक ने बताया कि जीएसटी की कर दरों की अतिरिक्त बुलियन एवं गहनों पर 3 प्रतिशत का जीएसटी निर्धारित किया गया। भारत में विकसित वस्तुओं पर शेष की दर 12 प्रतिशत से 160 प्रतिशत तक है। अर्थात जिन वस्तुओं पर जीएसटी नहीं लगता उन पर सेस का निर्धारण किया जा सकता है। मैन्युफैक्चरिंग इकाई पर आजीवन आयकर की दर 17.16 प्रतिशत निर्धारित की गई है। व्यक्तिगत करदाताओं की चर्चा करते हुए अपने स्पष्ट किया कि नई इएवं पुरानी कर व्यवस्था में नई कर व्यवस्था छोटे करदाताओं तथा उन वेतन भोगी करदाताओं के लिए लाभकारी है जो भविष्य के लिए विनियोग की क्षमता नहीं रखते। उनके कर दर में भी अंतर है। रामजी नायक ने बताया कि व्यक्तिगत वेतनभोगी करदाता न्यू कर प्रणाली से पुरानी कर प्रणाली में एवं पुरानी से नई कर प्रणाली में प्रतिवर्ष बदलाव कर सकते हैं, जबकि अन्य करदाता ऐसा नहीं कर सकते। अन्य करदाता एक बार यदि कोई कर प्रणाली चुनते हैं तो उन्हें 5 वर्ष उसी स्कीम में रहना होगा। अतिथि वक्ता ने विद्यार्थियों को रोजगार के लिए प्रेरित करते हुए बताया कि बीकॉम छत्र जीएसटी एवं आयकर की प्रैक्टिस कर सकते हैं, अपील एवं अपीलीय प्राधिकरण में पक्षवार की ओर से उसका पक्ष रखने के लिए अर्हवारी मान्य है। अतिथि वक्ता ने बताया की ई-कॉमर्स एवं अन्य व्यावसायिक कर दरें समान है। विभाग अध्यक्ष प्रोफेसर जे.के. जैन ने कहा कि वाणिज्य विभाग के विद्यार्थी कभी बेरोजगार नहीं रहते। उन्होंने बताया कि वाणिज्य एक जीवन शैली विषय है, अतः प्रत्येक व्यक्ति वाणिज्य सुगमन करता है। विभाग के प्रोफेसर मानवेंद्र सिंह पाहवा ने बताया कि करियर के लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए समयबद्धता एवं अनुशासन महत्वपूर्ण वाहक है। नायक से छात्रों ने अनेक प्रश्न किए जिनमें उन्होंने संतोषजनक जवाब दिया तथा छात्रों को करियर के लिए वाणिज्य एवं लेखांकन चुनने पर बधाई दी। आपने अपनी सी.ए. की जीवन यात्रा पर ही प्रकाश डला। कार्यक्रम के आरंभ में मां सरस्वती एवं डॉक्टर गौर के समक्ष दीप प्रज्वलन किया गया। कार्यक्रम का संचालन भव्यता एवं हर्षित जैन ने किया।' मुख्य वक्ता का परिचय शोधार्थी हर्षित जैन ने किया। कार्यक्रम में लगभग 120 विद्यार्थी, शिक्षक डॉ. अनिता कुमारी, डॉ. सुषमा यादव, डॉ. पुष्पा सूर्यवंशी, प्रो. मनविंदर सिंह पाहवा एवं एवं प्रो. जेके जैन। शोधार्थी लोकेंद्र, अदिति स्वामी, सुभाष गुप्ता, अंकित चौरसिया, गरिमा दोहर, पर्णवी निगानिया, सारांश कुमार श्रीवास्तव, पूजा ठाकुर, शिल्पा इक्का, महिमा हाबिल, गुरुदामन श्रीवास्तव आदि थे।

लोकगीत गायन समूह विधा में डॉ. गौर विश्वविद्यालय का दल प्रदेश में अव्वल

सागर | लोकगीत समूह गायन विधा में डॉ. हरीसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय का दल प्रदेश में अव्वल आया है। विजेता दल अब महाराष्ट्र के नासिक में आयोजित होने वाले राष्ट्रीय युवा उत्सव में शिरकत करेगा। विश्वविद्यालय के जनसंपर्क अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल ने बताया कि केंद्र सरकार के खेल एवं युवा मंत्रालय के तत्वावधान में भोपाल के रवींद्र भवन में आयोजित ओपन राज्य स्तरीय युवा उत्सव में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संगीत विभाग में अध्ययनरत 10 छात्रों के दल ने हिस्सा लिया। उन्होंने लोकगीत समूह गायन विधा में पूरे प्रदेश में पहला स्थान प्राप्त किया।

विजेता दल को इनाम में 60 हजार रुपए की नगद राशि प्राप्त हुई। दल में शोधार्थी यश गोपाल श्रीवास्तव के नेतृत्व में स्तुति खंपरिया, रिद्धी जैन, संजय कोरी, मैकलिन सिंह, यश पाठक, अतुल पथरोल, गोलू कुशवाहा, हिमांश खरारे, विधान चौबे, लक्ष्मीकांत अहिरवार और निखिल सोनी ने हिस्सा लिया। गीत रचना छात्र आशुतोष सिंह ने की। यह टीम अब नासिक में आयोजित राष्ट्रीय युवा उत्सव में शामिल होगी। विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने सभी विद्यार्थियों को जीत के लिए शुभकासनाएं दीं। सांस्कृतिक परिषद के समन्वयक डॉ. राकेश सोनी, डॉ. आशुतोष आदि ने शुभकामनाएं दीं।

पश्चिम क्षेत्रीय अंतर विवि हैंडबाल (पुरुष) प्रतियोगिता का आज होगा समापन

डॉ. हरिसिंह गौर विवि की टीम अंतिम चार में, ऑल इंडिया प्रतियोगिता के लिए क्वालीफाई

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग के तत्वाधान में आयोजित एआइयू-पश्चिम क्षेत्रीय अंतर विवि हैंडबाल (पुरुष) प्रतियोगिता के तीसरे दिन सुबह 8 बजे से मैंच शुरू हुए। तीसरे दिन चारों पूल के क्वालीफाई मैंच खेले गए।

डॉ. हरिसिंह गौर विवि की टीम ने 21-16 गोल से जीत हासिल कर अखिल भारतीय प्रतियोगिता के लिए क्वालीफाई किया। 13 जनवरी की सुबह 8 बजे से चारों क्वालीफाई टीमों के बीच लीग मैंच खेले जाएंगे। मैंच के बाद प्रतियोगिता का समापन समारोह आयोजित होगा। समापन समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता करेंगी। मैंचों में निर्णायक के रूप में सूर्यभान सिंह, सचिन, अरशद, आकाश, रंजन, विजय, मोहित यादव, संदीप राय, प्रेम प्रकाश, पंकज यादव, राहुल चित्रे, गणेश, अभिषेक, विशाल, फरीद, डॉ. गणेश चौबे, विनीत, नीरज ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ये मुकाबले खेले गए

- डॉ. हरिसिंह गौर विवि सागर वर्सेस नारायण व्यास विवि उदयपुर के बीच खेला गया जिसमें डॉ. हरिसिंह गौर विवि की टीम ने 21-16 गोल से जीत अर्जित कर अखिल भारतीय विवि प्रतियोगिता के लिए क्वालीफाई किया। सागर की ओर से नागेंद ने 5, अमिनन्यु ने 4, कुलदीप व विनय ने 3-3, भास्कर व कल्याण ने 2-2 और मनीष व रमेश ने 1-1 गोल कर टीम को विजय दिलाई।
- कोटा विवि वर्सेस आरटीएम नागपुर टीम के बीच खेले गए मैच में कोटा ने 36-28 गोल से जीत हासिल की और अंतिम चार में जगह बनाकर क्वालीफाई किया।
- राजस्थान विवि जयपुर और पारुल विवि की टीमों के मध्य खेले गए मैच में राजस्थान विवि 32-24 गोल से जीत हासिल की और अंतिम चार में जगह बनाई।
- एलएनआइपीई ग्वालियर और पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होल्कर विवि के बीच खेले गए मैंच में एलएनआइपीई की टीम 38-35 गोल से जीत दर्ज कर अंतिम चार में जगह बनाने में कामयाब रही।

सार्थक शोध कार्य किसी न किसी समस्या पर आधारित हो

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग में शुक्रवार को "कारक विश्लेषण (फैक्टर एनालिसिस)" पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में प्रोफेसर मनविंदर सिंह पहवा, विभागाध्यक्ष, विधि संकाय, को आमंत्रित किया गया।

विवि के वाणिज्य विभाग में कार्यशाला का आयोजन किया गया। ● नवदुनिया

यह कार्यशाला प्रतिभागियों के लिए शोध में एक नया आयाम प्रदान करेगी। कार्यशाला का शुभारंभ प्रो. जेके जैन, विभागाध्यक्ष, वाणिज्य विभाग द्वारा किया गया। अपने वक्तव्य के बताया कि सार्थक शोध कार्य वही है जो किसी ना किसी समस्या पर आधारित हो। प्रो. पहवा ने प्रतिभागियों को एसपीएसएस साफ्टवेयर से परिचय कराते हुए शोध में उसका महत्व बताया व कारक विश्लेषण के माध्यम से कारको का संक्षिप्तिकरण बताया। डेटा विश्लेषण के निरंतर विस्तार में, फैक्टर एनालिसिस" एक महत्वपूर्ण उपकरण के रूप में प्रकट हो रहा है जो जटिलता में क्रम लाने में सहारा प्रदान करता है। यह सांख्यिकीय तकनीक विभिन्न क्षेत्रों में जैसे शिक्षा, वित्त आदि में प्रमुखता प्राप्त कर रही है। कार्यशाला में प्रतिभागियों को सैद्धांतिक ज्ञान के साथ ही व्यवहारिक ज्ञान प्रदान किया गया जो शोध में अत्यंत उपयोगी साबित होगी। इस कार्यशाला में सभी शोधार्थी, स्नातक तथा स्नातकोत्तर के छात्र शामिल हुए।

युवा दिवस पर जीवन में योग का बताया महत्व

सागर @ पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय में युवा दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। प्रो. भवतोष इंद्र गुरु ने कहा कि योग का जीवन में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। विशिष्ट अतिथि आर्मी पब्लिक स्कूल की

प्राचार्य ज्योति दुबे ने कहा कि आधुनिक समय में विवेकानंद की शिक्षाओं का क्या महत्व है यह समझना आवश्यक है। इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विवि के योग प्राध्यापक डॉ. संदीप ठाकरे ने कहा कि योग में गुरु कृपा का विशेष महत्व है। संचालन दर्शन यादव एवं यशी यादव ने किया। आभार डॉ. ब्रजेश ठाकुर ने माना।

बैठक ▶ सागर विवि के संस्थापक डॉ गौर को भारत रत्न प्रदान करने को लेकर बैठक

डॉ गौर के कार्यों को रेखांकित करने प्रस्ताव तैयार होगा

नवभारत न्यूज

सागर 12 जनवरी. डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय के कुलपति सम्मेलन कक्ष में विवि संस्थापक डॉ. सर हरीसिंह गौर को भारत रत्न प्रदान किये जाने विषयक बैठक का आयोजन कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में संपन्न हुई.

गौरतलब है कि डॉ. सर हरीसिंह गौर को भारत रत्न प्रदान किये जाने का प्रयास विवि विगत कई वर्षों से करता आ रहा है. इस हेतु समय-समय पर विभिन्न माध्यमों से ज्ञापन/प्रस्ताव भी भारत सरकार की ओर प्रेषित किये गये हैं. बैठक के प्रारंभ में प्रो. संजय जैन ने भारत रत्न प्रदान किये जाने हेतु गठित समिति की पूर्व बैठकों एवं इस दिशा में किये गये कार्यों पर प्रकाश डाला. बैठक में कुलपति ने कहा कि शीघ्र ही गौर हैरीटेज सेंटर विश्वविद्यालय में प्रारंभ हो रहा है. इसके लिये औपचारिकतायें पूर्ण कर ली गई हैं. नवीन भवन के लिये बजट के प्रयास किये जा रहे हैं. समाजवादी चिन्तक रघु ठाकुर ने भारत रत्न के लिये तैयार किये जाने वाले प्रस्ताव में कई सुझाव भी दिए.

सर्वसम्मति से विचार बना कि डॉ. गौर को भारत रत्न प्रदान किये जाने के लिये समस्त कार्य सारगर्भित एवं एकीकृत ढंग से किये जायें. बैठक में भारत रत्न के लिये समन्वित प्रयास के साथ- साथ डॉ. गौर के द्वारा किये गये महत्वपूर्ण कार्यों को रेखांकित करते हुये एक नवीन प्रस्ताव शीघ्रातिशीघ्र तैयार किये जाने के साथ ही एक प्रतिनिधि मंडल के गठन पर भी सहमती बनी.

खेल

अंतर विश्वविद्यालय हैंडबाल प्रतियोगिता के तीसरे दिन हुए रोमांचक मुकाबले

विवि की टीम ने आल इंडिया के लिए किया क्वालीफाई

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के शारीरिक शिक्षा विभाग के तत्वाधान में आयोजित एआइयू-पश्चिम क्षेत्रीय अंतर विवि हैंडबाल (पुरुष) प्रतियोगिता के तीसरे दिन चारों पूल के क्वालीफाई मैच खेले गए।

डा. हरीसिंह गौर विवि की टीम ने 21-16 गोल से जीत अर्जित कर अखिल भारतीय प्रतियोगिता के लिए क्वालीफ़ाई किया। शनिवार को सुबह 8 बजे से चारों क्वालीफाई टीमों के बीच लीग मैच खेले जाएंगे।

मैच के बाद प्रतियोगिता का समापन समारोह संपन्न होगा। समापन समारोह की अध्यक्षता विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता करेंगी।

मैच के निर्णायक सूर्यभानसिंह, सचिन, अरशद, आकाश, रंजन, विजय, मोहित यादव, संदीप राय, प्रेम प्रकाश, पंकज यादव, राहुल चित्रे, गणेश, अभिषेक, कुंदन, कोटिल्य, सुल्तान, विशाल, फ़रीद, डा. गणेश चौबे, विनीत, नीरज रहे।

मैच में प्रो. जेके जैन, प्रो. सुबोध जैन, प्रो. के एस पित्रे, प्रो. गिरीश मोहन दुबे, डा. विवेक वी साठे, संतोष सोहगौरा, आरके पाल, डा. राजू टंडन, डा. केशव टेकाम ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया और उनका मनोबल बढ़ाया। इस अवसर पर डा. सुमन पटेल, सुभाष हार्डिकर, विनय शुक्ला, अनवर ख़ान एवं महेंद्र कुमार सहित कई शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी, विद्यार्थी उपस्थित रहे।

मैच के दौरान गोल करने का प्रयास करते हुए खिलाड़ी। नवदुनिया

डा. हरीसिंह गौर विवि सागर की टीम ने जय नारायण व्यास विवि उदयपुर की टीम को 21-16 गोल से पराजित कर अखिल भारतीय विवि प्रतियोगिता के लिए क्वालीफ़ाई किया। सागर की ओर से नागेंद्र ने 5, अभिमन्यु ने 4, कुलदीप, विनय ने 3-3, भास्कर, कल्याण ने 2-2 एवं मनीष, रमेश ने 1-1 गोल कर टीम को विजय दिलाई।

कोटा विवि की टीम ने आरटीएम नागपुर की टीम को 36-28 गोल से हराकर अंतिम चार में जगह बनाकर क्वालीफ़ाई किया।

राजस्थान विवि जयपुर की टीम ने पारुल विवि को 32-24 गोल से हराकर अंतिम चार में जगह बनाई।

एलएनआईपीई ग्वालियर की टीम ने पुण्यश्लोक अहिल्यादेवी होल्कर विवि की टीम को 38-35 गोल से पराजित कर अंतिम चार में जगह बनाई।

विश्वविद्यालय • डॉ. गौर को भारत रत्न दिलाने नया प्रस्ताव बनेगा, प्रतिनिधिमंडल का होगा गठन

डॉ. गौर के संपूर्ण योगदान को रेखांकित करना होगा, जिससे भारत रत्न की मांग साकार हो सके: कुलपति

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के कुलपति सम्मेलन कक्ष में विश्वविद्यालय के संस्थापक डॉ. गौर को भारत रत्न प्रदान किए जाने के संबंध में बैठक शुक्रवार को कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता की अध्यक्षता में हुई। बैठक का उद्देश्य डॉ. गौर को भारत रत्न प्रदान किए जाने की दिशा में किए गए कार्यों की समीक्षा एवं आगामी रूपरेखा तैयार कर नवीन प्रस्ताव भारत सरकार की ओर भेजने से संबंधित था।

प्रो. संजय जैन ने समिति की पूर्व बैठकों एवं इस दिशा में किए गए कार्यों पर प्रकाश डाला। कुलपति प्रो. गुप्ता ने विश्वविद्यालय द्वारा डॉ. गौर की स्मृतियों को अक्षुण्य बनाए रखने के लिए गौर पीठ की स्थापना की जानकारी देते हुए कहा जल्दी ही गौर हेरिटेज सेंटर विश्वविद्यालय में प्रारंभ हो रहा है। इसके लिए औपचारिकताएं पूरी कर ली गई हैं। नवीन भवन के लिए बजट के प्रयास किए जा रहे हैं। बजट प्राप्त होते ही नवीन भवन के निर्माण का कार्य प्रारंभ कर दिया जाएगा।

सागर। कुलपति नीलिमा गुप्ता की मौजूदगी में विश्वविद्यालय में बैठक हुई।

उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि डॉ. गौर को भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न क्यों मिलना चाहिए? डॉ. गौर क्यों इस सम्मान के हकदार हैं? इसके लिए डॉ. गौर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के साथ-साथ उनका सामाजिक सरोकार, प्रतिबद्धता, सामाजिक उत्थान के प्रति उनकी विचारशीलता, स्त्री शिक्षा एवं सम्मान के लिए उनके प्रयास एवं इस दिशा में किए गए कार्यों, गैर बराबरी को दूर करने के लिए लाए गए विधि के प्रावधानों और शिक्षा जैसी महत्वपूर्ण शाख को तत्समय भारत के इस सुदूर स्थित सागर जैसे कस्बे में विश्वविद्यालय को खोलना, जिससे अंतिम पंक्ति का व्यक्ति भी उच्च शिक्षा के अपने स्वप्न को साकार कर सके, सहित उनके संपूर्ण योगदान को रेखांकित करते हुए अवगत कराया जाए। जिससे लंबे समय से डॉ. गौर को भारत रत्न प्रदान किए जाने के लिए की जा रही मांग साकार हो सके। बैठक में भारत रत्न के लिए समन्वित प्रयास के साथ डॉ. गौर द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्यों को रेखांकित करते हुए एक नया प्रस्ताव जल्दी तैयार करने के साथ ही एक प्रतिनिधिमंडल के गठन पर भी सहमति बनी।

यह समिति केंद्रीय गृहमंत्री एवं प्रधानमंत्री से भेंट कर डॉ. गौर को भारत रत्न दिए जाने के लिए प्रस्ताव सौंपेगी। बैठक में प्रो. आरके त्रिवेदी, प्रो. पीपी सिंह, एसआर आठिया, डॉ. संदीप रावत, प्रो. दिवाकर सिंह राजपूत, डॉ. संजय शर्मा, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एसपी उपाध्याय मौजूद थे।

डॉ. गौर को भारत रत्न दिलाने समन्वित प्रयास हों: रघु ठाकुर

समाजवादी चिंतक रघु ठाकुर ने विवि द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना करते हुए भारत रत्न के लिए तैयार किए जाने वाले प्रस्ताव में कई सुझाव भी दिए। सर्वसम्मति से यह विचार बना कि डॉ. गौर को भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न प्रदान किए जाने के लिए समस्त कार्य सारगर्भित एवं एकीकृत ढंग से किए जाएं। जिससे विश्वविद्यालय परिवार के साथ सागरवासियों की यह अभिलाषा अपना मूर्त रूप पा सके।

विश्वविद्यालय के एप्लाइड जियोलॉजी विभाग के 16 विद्यार्थी भूगर्भशास्त्री और भू-जल विज्ञानी बने

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के एप्लाइड जियोलॉजी विभाग के 16 विद्यार्थी 'जियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया' (जीएसआई) में भूगर्भशास्त्री और भू-जल विज्ञानी बन गए हैं। इनमें से दो विद्यार्थियों का चयन दोनों पदों के लिए हुआ है। यूपीएससी ने जियोलॉजिस्ट/हाइड्रोलॉजिस्ट परीक्षा-2023 का परिणाम घोषित कर दिया है। इसी में विभाग के 16 विद्यार्थियों ने लिखित परीक्षा के बाद अब इंटरव्यू में सफल होकर यह उपलब्धि हासिल की है। गौरतलब है कि विश्वविद्यालय के एप्लाइड जियोलॉजी विभाग से हर साल भूगर्भशास्त्री और भूजल विज्ञानी निकलते रहते हैं। लिखित परीक्षा का रिजल्ट आने के बाद विभाग के शिक्षकों ने इंटरव्यू के लिए खास तौर पर मेहनत की। विद्यार्थियों को जरूरी टिप्स दिए। नतीजा अब सबके सामने है। विभाग के प्रो. एचएल थॉमस, प्रो. पीके कथल, प्रो. आरके त्रिवेदी, प्रो. एसएच आदिल, प्रो. आरके रावत आदि शिक्षकों ने विद्यार्थियों को विशेष तौर पर मार्गदर्शन दिया। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने इस पर प्रसन्नता जताते हुए इसे विवि के लिए बड़ी उपलब्धि बताया है। विभाग द्वारा बताया गया है कि सफल विद्यार्थियों की संख्या बढ़कर 19 तक हो सकती है। हालांकि 3 विद्यार्थियों के नाम देर रात तक स्पष्ट नहीं हो सके थे।

इनका हुआ चयन

अनुराग त्रिवेदी, वरुण वेदांत, आकांक्षा कुशवाहा, गरिमा सिंह, धर्मेंद्र चौहान, ऋषभ बत्री, दीपंकर सोनोवाल, प्रियतम बिसवाल, प्रियव्रत राउल, महिमा अवस्थी, राधा अवस्थी, ऋषिता जैन, नैनिका गौर, अमन सोनी, वरुण शास्त्री, मोहम्मद रजा।

सत्ता सुधार | **सागर**

खेल जिन्दगी का आइना है, यह सब कुछ सिखाता है : मीर रंजन नेगी

विश्वविद्यालय एआईयू वेस्ट जोन हैंडबॉल पुरुष प्रतियोगिता का हुआ शुभारम्भ

सत्ता सुधार ■ सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर में 10 से 13 जनवरी तक चलने वाली पुरुष एआईयू वेस्ट जोन हैंडबॉल प्रतियोगिता का भव्य शुभारम्भ विश्वविद्यालय के अब्दुल गनी खान स्टेडियम में हुआ. कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. गौर की प्रतिमा पर अतिथियों द्वारा माल्यार्पण के साथ हुई।

शारीरिक शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ. विवेक साठे ने स्वागत वक्तव्य दिया और आयोजन की रूपरेखा प्रस्तुत की. इस अवसर पर विश्वविद्यालय स्पोर्ट्स बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. गिरीश मोहन दुबे एवं प्रभारी कुलसचिव डॉ. एस. पी. उपाध्याय मंचासीन थे. भारतीय सेना के बैंड के साथ खिलाड़ियों ने अपने विश्वविद्यालय के ध्वज के साथ परेड में हिस्सा लिया. अतिथियों द्वारा सभी प्रतिभागियों को खेल शपथ दिलाई गई। उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि अंतरराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी, कोच एवं चक दे इंडिया फेम मीर रंजन नेगी ने कहा कि खेल में व्यक्ति हारता है, जीतता है और फिर हारता है. यह हार-जीत लगी रहती है लेकिन खेल भावना जीवन में सब कुछ सिखाता है।

यह व्यक्ति के जीवन का एक आइना है. खेल हमें लाइफ स्किल के साथ-साथ जीवन में अनुशासन भी सिखाता है. उन्होंने अपने जीवन-संघर्ष की कई घटनाओं का जिक्र करते हुए कहा कि एक खिलाड़ी जब जीत हासिल करता है तो सभी प्रशंसा करते हैं लेकिन जब हारता है तो उसे जनमानस में अलग दृष्टि से देखा जाने लगता है। उन्होंने कहा कि हॉकी के एक मैच में 07 गोल से हारने पर मेरे ऊपर कई आरोप लगे लेकिन मैंने हॉकी का दामन नहीं छोड़ा और हमने कड़ी मेहनत की और धनराज पिल्लई की कप्तानी में हमने गोल्ड मेडल जीता। उन्होंने एफ्रो एशियन गेम्स से जुड़े कई यादगार किस्से सुनाये. उन्होंने चक दे इण्डिया फिल्म के निर्माण की कई स्मृतियों को साझा करते हुए कहा कि हमने वास्तविक जीवन में उन लड़कियों को प्रशिक्षित किया जिन्होंने अपने कभी हॉकी का स्टिक नहीं पकड़ा था। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रभारी कुलपति प्रो. पी के कठ्ल ने सभी खिलाडियों का हौसला आफजाई करते हुए खेल भावना के साथ खिलाड़ियों को अपना बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने विश्वविद्यालय में खेल गतिविधियों की ख्याति को भी रेखांकित करते हुए कहा कि अकादमिक गतिविधि और खेल एक दूसरे के पूरक हैं. खेल के नियम हमें जीवन में अनुशासित रहना सिखाते हैं. खेल जीवन में उत्थान एवं गति लाता है. सभी खिलाड़ी निर्णायक मंडल के निर्णय को स्वीकार करते हुए अपने विश्वविद्यालय का नाम रोशन करें।

समारोह के उपरांत अतिथियों ने प्रतिभागियों से परिचय प्राप्त किया।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. सुमन पटेल ने किया एवं आभार महेंद्र बाथम ने व्यक्त किया. इस अवसर पर इस अवसर पर प्रो.आशीष वर्मा, प्रो उत्सव आनंद, डॉ सुभाष हार्डिकर, डॉ मोनिका हार्डिकर, प्रदीप अभद्रा, बीनू राणा , विनय शुक्ला, अनवर खान, डॉ मनोज जैन, डॉ राकेश सोनी, डॉ राजेंद्र यादव, डॉ हिमांशु यादव, डॉ आशुतोष मिश्र, डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ वीरेंद्र, डॉ. रजनीश, डॉ. नवीन, डॉ. भूपेन्द्र पटेल, विवि यंत्री राहुल गोस्वामी, हरदीप सिंह, सूरज, अभिषेक मंगल, कोटिल्या, संदीप राय रंजन मोहंती, सुहैल कुरैशी सहित विश्वविद्यालय के कई शिक्षक, शहर के गणमान्य नागरिक, अधिकारी, कर्मचारी, छात्र एवं पत्रकार बंधु उपस्थित रहे।

प्रतियोगिता के पहले चरण में खेले गये मैच एवं विजेताओं की सूची इस प्रकार है-

1- एल एन आई पी ई ग्वालियर 1/ह्य जे एन व्यास वि वि जोधपुर के बीच खेला गया. एल एन आई पी ई की टीम ने जीत दर्ज कर अगले राउंड में प्रवेश किया।

2-गुजरात टैक्नॉलाजिकल विवि V/s सनराइस विवि अलवर के बीच खेला गया. गुजरात टैक्नॉलाजिकल विवि ने जीत अर्जित की ।

3- एस आर टी एम वि वि नांदेड V/s जीवाजी वि वि ग्वालियर के बीच खेला गया. जिसमें नादेड ने जीत अर्जित की ।

4- संत गाडगे बाबा अमरावती V/s आर आर वि वि गांधीनगर गुजरात के बीच खेला गया जिसमें अमरावती ने जीत दर्ज की ।

5- सौराष्ट्र वि वि राजकोट V/s गोविंद गुरु वि वि बाँसवाड़ा के बीच खेला गया जिसमें सौराष्ट्र वि वि ने जीत अर्जित की ।

6 - गुजरात वि वि V/s पसिफ़िक वि वि उदयपुर के बीच खेला गया जिसमें पसिफ़िक ने जीत दर्ज की ।

7- पुण्यश्लोक अहिल्या देवी विवि सोलापुर V/s मौलाना आज़ाद विवि जोधपुर के बीच खेला गया गया जिसमें पुण्यश्लोक विवि ने जीत अर्जित की ।

8- यूनिवर्सिटी मुंबई V/s भगवान महावीर वि वि सूरत के मध्य खेला गया जिसमें मुंबई ने जीत अर्जित की ।

9- महाराजा सूरजमल ब्रज विवि भरतपुर V/s भूपल नॉवल्स वि वि उदयपुर के बीच. भरतपुर वि वि ने जीत अर्जित की ।

10- सावित्री बाई फुले वि वि पुणे V/s महाराजा सयोजिराव वि वि बड़ौदा के बीच खेला गया. पुणे वि वि ने 35-11 गोल से जीत दर्ज की ।

11- सरदार पटेल वि वि गुजरात V/s आर आर बी विवि अलवर के बीच खेला गया जिसमें अलवर ने 16-3 गोल से जीत अर्जित की

12- कोटा वि वि कोटा V/s एपीएसयू रीवा के बीच खेला गया जिसमें कोटा ने 23-10 से जीत अर्जित कर अगले राउंड में प्रवेश किया।

विश्व दर्शन दिवस कार्यक्रम हुआ

विकसित भारत के सपने को साकार करें युवा : कुलपति

सागर @ पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर विवि सागर के दर्शनशास्त्र विभाग में विवेकानंद जयंती के अवसर पर विश्व दर्शन दिवस का आयोजन किया।

भारतीय संस्कृति के आधारभूत मूल्य एवं राष्ट्र के पुनर्निर्माण में उनकी भूमिका विषय पर भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा कार्यक्रम कराया गया। मुख्य अतिथि सांची बौद्ध-भारतीय अध्ययन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बैद्यनाथ लाभ ने कहा कि बौद्ध परंपरा में उपदिष्ट मूल्यों को जीवन में उतार कर राष्ट्र का सम्यक पुनर्निर्माण किया जा सकता है। विशिष्ट अतिथि जवाहर बाल भवन भोपाल के निदेशक डॉ. उमाशंकर नगायच ने वैदिक संस्कृति को ही भारतीय संस्कृति का पर्याय कहा। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने युवाओं को राष्ट्र के पुनर्निर्माण में योगदान देने एवं विकसित भारत के सपने को साकार करने के लिए कहा। दर्शनशास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रो. अम्बिका दत्त शर्मा तथा उपाचार्य डॉ. अनिल कुमार तिवारी ने अतिथियों का स्वागत किया।

स्वागत किया गया।

डॉ. हरीसिंह गौर विवि के रसायन विभाग के शोधार्थी हुये सम्मानित

सागर, देशबन्धु। डॉ. हरीसिंह गौर विवि के रसायन विभाग के शोधार्थी रवि भूषण पाठक को विश्लेषणात्मक पर्यावरण विज्ञान में सर्वोत्तम ओरल प्रेजेंटेशन के लिए प्रो. एसटी नंदी बेवूर अवार्ड से तथा अंशिता वार्ष्णेय को अकार्बनिक विज्ञान में यंग साइंटिस्ट पोस्टर अवार्ड से वर्ष 2023 में आईसीसी की 42 वीं एनुअल कॉन्फ्रेंस में सम्मानित किया गया। इंडियन काउंसिल आफ कैमिस्ट का यह आयोजन इस वर्ष कोटा, राजस्थान में किया गया था। उन्हें यह पुरस्कार कोटा यूनिवर्सिटी की वाइस चांसलर प्रो. नीलिमा सिंह तथा डॉ. अंबेडकर यूनिवर्सिटी की वाइस चांसलर प्रो. आशुरानी द्वारा प्रदान किया गया। रवि भूषण और अंशिता वार्ष्णेय विवि के रसायन विभाग के विभागाध्यक्ष और अधिष्ठाता प्रो. एपी मिश्रा के निर्देशन में रिसर्च कर रहे हैं, रवि के सह निर्देशक प्रो. विजय वर्मा हैं। उनकी इस उपलब्धि पर विश्वविद्यालय के तथा सागर मित्रों और सहयोगियों ने उन्हें बधाई दी है जिनमें गौर यूथ फोरम के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. विवेक तिवारी, अंकित चौबे, शिवांशु धर्माधिकारी, भवानी प्रजापति, विनय त्रिपाठी, रामपाल प्रजापति, दीपशिखा गुप्ता आदि है।

विश्वविद्यालय पश्चिम क्षेत्रीय अंतर विवि हैंडबाल (पुरुष) प्रतियोगिता का समापन

13 वर्षों बाद डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विवि की टीम ने वेस्ट जोन में प्रथम स्थान किया हासिल

लगन व परिश्रम से सपनों को उड़ान मिलती है- कुलपति

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

सागर. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर में 10 से 13 जनवरी तक चलने वाली चार दिवसीय एआइयू वेस्ट जोन हैंडबॉल (पुरुष) प्रतियोगिता का अब्दुल गनी खान स्टेडियम में शनिवार को समापन हुआ।

प्रतियोगिता में देश के वेस्ट जोन के 72 विवि की टीमों ने हिस्सा लिया था जिसमें डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विवि की टीम ने 13 वर्षों के बाद वेस्ट जोन में पहली बार पुरुष हैंडबाल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हासिल किया है।

समापन समारोह विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि हार-जीत खेल का नैसर्गिक हिस्सा है। आपकी लगन, परिश्रम व जीजिविषा आपके सपनों को उड़ान देता है। खेल भावना हमें सिखाती है कि निरंतर अभ्यास से जीवन के हर लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है। डॉ. हरिसिंह गौर विवि की टीम ने प्रतियोगिता में एतिहासिक उपलब्धि हासिल की है। यह विश्वविद्यालय के साथ-साथ पूरे सागर के लिए गौरव का विषय है।

उन्होंने कहा कि फिट इंडिया अभियान के तहत विश्वविद्यालय में सिंथेटिक ट्रैक और स्वीमिंग पूल जैसी खेल सुविधाओं को बढ़ावा देने के लिए हेफा द्वारा विश्वविद्यालय का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया है, जिसके तहत जल्द ही विश्वविद्यालय में सिंथेटिक ट्रैक व स्वीमिंग पूल का निर्माण कराकर खेल सुविधाओं को राष्ट्रीय स्तर का बनाने का प्रयास किया जाएगा।

आखिरी दिन ये मुकाबले हुए

- राजस्थान विवि जयपुर वर्सेस कोटा विवि के मध्य खेला जिसमें कोटा विवि ने 35-36 गोल से जीत हासिल की।
- डॉ. हरिसिंह गौर विवि सागर वर्सेस राजस्थान विवि जयपुर के मध्य खेला गया जिसमें सागर विवि ने 16-15 से मैच जीता।
- एलएनआइपीई ग्वालियर वर्सेस कोटा विवि के मध्य खेला गया जिसमें ग्वालियर ने 37-31 से जीत हासिल की।
- कोटा विवि और डॉ. हरिसिंह गौर विवि सागर के मध्य खेला गया जिसमें सागर विवि ने 16-25 से जीत हासिल की।
- एलएनआइपीई ग्वालियर वर्सेस राजस्थान विवि जयपुर के मध्य खेला गया जिसमें 36-44 गोल से जयपुर ने जीत हासिल की।
- डॉ. हरिसिंह गौर विवि सागर वर्सेस एलएनआइपीई ग्वालियर के मध्य खेला गया जिसमें सागर ने 30-28 से जीत अर्जित की।

अंतिम चार की स्थिति

वेस्टजोन के अंतिम चार में डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर प्रथम, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर द्वितीय, लक्ष्मीबाई राष्ट्रीय शारीरिक शिक्षा संस्थान ग्वालियर तृतीय और कोटा विश्वविद्यालय ने चतुर्थ स्थान प्राप्त किया। कुलपति ने टीमों को ट्रॉफी प्रदान कर उन्हें शुभकामनाएं दीं। अखिल भारतीय विश्वविद्यालय संघ और विश्वविद्यालय के ध्वज फहराकर प्रतियोगिता का समापन किया गया। इस मौके पर शारीरिक शिक्षा विभाग के निदेशक डॉ. विवेक साठे, विश्वविद्यालय स्पोर्ट्स बोर्ड के अध्यक्ष प्रो. गिरीश मोहन दुबे, डॉ. राकेश सोनी, डॉ. राजेंद्र यादव, डॉ. हिमांशु यादव, डॉ आशुतोष मिश्र, महेंद्र बाथम, डॉ. सुमन पटेल, विनय उपस्थित रहे।

केमिस्ट्री विभाग के शोधार्थी रवि और अंशिता को यंग साइंटिस्ट अवार्ड

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के रसायन विभाग के शोधार्थी रविभूषण पाठक को विश्लेषणात्मक पर्यावरण विज्ञान में सर्वोत्तम ओरल प्रिजेंटेशन के लिए प्रोफेसर एसटी नंदी बेवूर अवार्ड से तथा अंशिता वार्ष्णेय को अकार्बनिक विज्ञान में यंग साइंटिस्ट पोस्टर अवार्ड से सम्मानित किया गया। दोनों को ही यह अवार्ड वर्ष-2023 में आईसीसी की 42वीं एनुअल कांफ्रेंस में मिले। इंडियन काउंसिल ऑफ केमिस्ट का यह आयोजन कोटा राजस्थान में हुआ। कोटा विवि की वाइस चांसलर प्रोफेसर नीलिमा सिंह तथा डॉ. अंबेडकर यूनिवर्सिटी की वाइस चांसलर प्रोफेसर आशु रानी ने यह सम्मान दिए। पाठक और वार्ष्णेय केमिस्ट्री के विभागाध्यक्ष और अधिष्ठाता प्रो. एपी मिश्रा के निर्देशन में शोध कर रहे हैं। पाठक के सहनिर्देशक प्रो विजय वर्मा हैं।

सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना का सबसे बड़ा पर्व है मकर संक्रांति : कुलपति

नववर्ष एवं मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय में आयोजित हुआ मिलन समारोह

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में नववर्ष एवं मकर संक्रांति के अवसर पर मिलन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में कुलपति सहित अन्य शिक्षकों ने पतंग उड़ाई और मिलकर खुशियां मनाई।

विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा कि हमारी भारतीय संस्कृति का सार सूत्र उसके भारतीय खान-पान एवं परंपराओं में निहित है। यह सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना का सबसे बड़ा पर्व माना जाता है। इस अवसर पर हम संकल्प लें कि हम सभी समन्वित प्रयासों से विश्वविद्यालय की अकादमिक एवं रचनात्मक गतिविधियों को उपलब्धियों के उतुंग शिखर तक ले जाएंगे। उन्होंने इस तिथि पर पतंग उड़ाने के सांकेतिक महत्व को बताते हुए कहा कि यह एक समन्वित संकल्प के साथ नई ऊंचाइयों पर पहुंचने का प्रतीक है।

कार्यक्रम के दौरान पतंग उड़ाती हुई कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता। • नवदुनिया

इस अवसर पर विवि के गौर प्रांगण में मकर संक्रांति के व्यंजनों का स्वल्पाहार कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने मकर संक्रांति के हर्ष का प्रतीक पतंगबाजी भी की। कार्यक्रम में विवि के शिक्षक प्रो. पीके कठल, प्रो. नवीन कानगो, प्रोफ. एच. थामस, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रभारी कुलसचिव डा. एसपी उपाध्याय, उपकुलसचिव सतीश कुमार डा. हिमांशु, डा. आशुतोष, डा. राकेश सोनी, डा पंकज तिवारी मौजूद रहे।

विवि ने तैयार किया भजन हे राम चले आओ... टीजर किया रिलीज

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संगीत विभाग एवं ईएमआरसी द्वारा डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर द्वारा गाया 'हे राम चले आओ" भजन की रील एवं टीजर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता द्वारा रिलीज किया गया। कुलपति प्रो. गुप्ता के निर्देशन में भजन का डिजिटल स्वरूप तैयार किया गया है। कुलपति प्रो. गुप्ता ने भजन को विवि की ओर से प्रधानमंत्री मोदी को भेंट किया है। इस संबंध में निर्देश कार्यालय को दिए गए हैं। कुलपति प्रो. गुप्ता ने व्यक्तिगत रुचि लेते इसके प्रसार के लिए और पीएमओ के सोशल मीडिया पर टैग करने और विश्वविद्यालय के सभी सोशल मीडिया ग्रुप्स आदि पर इसे भेजने के सुझाव दिए।

यह भजन ठाकुर राम सिंह तोमर "रागी" द्वारा 1952 में रचित एवं संगीतबद्ध किया गया है। इसे वो आज भी गाते एवं सिखाते हैं। डॉ. तोमर ढाई वर्ष की आयु से यह गीत गा रहे हैं। चार वर्ष की आयु में भिलाई से लेकर मई 2018 में फ्रांस तक उन्होंने अपने इन भजनों से सम्मान पाया है। ईएमआरसी सागर के द्वारा दो ऑनलाइन कोर्स में भारत के अलावा अन्य देशों के विद्यार्थियों ने भी यह भजन ऑनलाइन सीखा है। डॉ. पंकज तिवारी डायरेक्टर ईएमआरसी एवं कोर्स के निर्माता भरतेश जैन द्वारा भजन को सोशल

मीडिया की रील की तर्ज पर बनाया गया है। संगीत विभाग के डॉ. राहुल स्वर्णकार, शैलेंद्र राजपूत ने इसके निर्माण में विशेष सहयोग दिया। संगीत विभागाध्यक्ष, ईएमआरसी स्टाफ एवं विभाग के वरिष्ठ विद्यार्थियों ने भी इसमें सहयोग दिया है। अयोध्या के राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के मौके पर विश्वविद्यालय की ओर से जनभावनाओं के अनुरूप यह पहला कदम है। 22 जनवरी को विस्तृत कार्यक्रम की रूपरेखा को लेकर डोआ प्रो. नवीन कांगो, डॉ. अवधेश तोमर, डॉ. राहुल स्वर्णकार, डॉ. राकेश सोनी को भी कुलपति प्रो. गुप्ता ने निर्देश दिए हैं।

होटल दीपाली में
आवश्यकता
मैनेजर - 4 पद
वेतन - 20000/-
रिसेप्शनिस्ट - 5 पद
(fluent English compulsory)
वेतन - 15000/-
दोनों पदों हेतु योग्यता - ग्रेजुएशन
आवेदन की अंतिम तिथि-21 जनवरी 2024
संपर्क : होटल दीपाली, जबलपुर रोड सागर (म.प्र.) 470004, मो.9109993582
आवेदन भेजने हेतु Email-
hoteldeepalisagar@gmail.com

संस्कृति के समृद्ध त्योहारों के माध्यम से एकता और अखंडता का संदेश प्रवाहित होता है: कुलपति

विश्वविद्यालय : नव वर्ष एवं मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में मिलन समारोह हुआ

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में नववर्ष एवं मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में मिलन समारोह हुआ। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा हमारी भारतीय संस्कृति का सार सूत्र भारतीय खान-पान एवं परंपराओं में निहित है। यह सांस्कृतिक, धार्मिक और आध्यात्मिक चेतना का सबसे बड़ा पर्व माना जाता है। इस अवसर पर हम संकल्प लें कि हम सभी समन्वित प्रयासों से विश्वविद्यालय की अकादमिक एवं रचनात्मक गतिविधियों को उपलब्धियों के उतुंग शिखर तक ले जाएंगे।

विश्वविद्यालय में नवागंतुक शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों के लिए भी इस मायने में विशेष है कि एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक समागम के जरिए वे सब एक दूसरे से परिचित हो सकेंगे। उन्होंने इस तिथि पर पतंग उड़ाने के सांकेतिक महत्व को बताते हुए कहा यह एक समन्वित संकल्प के साथ नई ऊंचाइयों पर पहुंचने का प्रतीक है। भारतीय संस्कृति ऐसे कई पारंपरिक अवसरों एवं त्योहारों से समृद्ध है जिनके माध्यम से एकता और अखंडता का संदेश प्रवाहित होता है। विश्वविद्यालय के गौर प्रांगण में मकर संक्रांति के व्यंजनों का स्वल्पाहार कार्यक्रम भी किया गया। इस मौके पर विद्यार्थियों ने पतंगबाजी भी की। कार्यक्रम में प्रो. पीके कठल, प्रो. नवीन कानगो, प्रो. एच थामस, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एसपी उपाध्याय, उपकुलसचिव सतीश कुमार, डॉ. हिमांशु, डॉ. आशुतोष, डॉ. राकेश सोनी, डॉ पंकज तिवारी सहित अन्य शिक्षक, अधिकारी, कर्मचारी एवं एनसीसी के विद्यार्थी मौजूद थे।

सागर, सोमवार 15 जनवरी, 2024

ये है गौरैया की कॉलोनी

विश्वविद्यालय ने दीवार में छेद कर बनवाए गौरैया के घर, उद्देश्य विलुप्त होती चिड़िया का संरक्षण हो, सबके नाम और क्वार्टर भी अलग-अलग

संडे पॉजिटिव

संदीप तिवारी | सागर

लुप्तप्राय हो चली गौरैया चिड़िया के संरक्षण के लिए डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय में उनकी आवासीय कॉलोनी बनाई गई है। इसे नाम दिया गया है गौर गौरैया रेसीडेंशियल कॉलोनी। दरअसल, विश्वविद्यालय में पहाड़ी से लगकर रिटेनिंग वॉल बनाई गई और बारिश का पानी निकालने के लिए उसमें छेद भी किए गए। इसी में कुछ गौरैया चिड़ियों ने अपना बसेरा बनाना शुरू कर दिया। विद्यार्थियों ने उनके लिए दाना-पानी रखना भी शुरू कर दिया।

इसकी जानकारी लगने पर कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने रिटेनिंग वॉल को इस तरह से तैयार करने के निर्देश दिए कि गौरैया के लिए आवासीय कॉलोनी की तर्ज पर डिजाइन करें। इसके बाद विवि की सांस्कृतिक परिषद के समन्वयक डॉ. राकेश सोनी ने यहां अलग-अलग रंगों से इसे रंगवाया। रिटेनिंग वॉल में जो अलग-अलग छेद हैं, उन्हें क्वार्टर मानते हुए अलग-अलग रंग से पुतवाया। इनमें रहने वाली गौरैया के नाम चीनी, निनी, हनी, गोल्डी, जैरी आदि रखते हुए उनके क्वार्टर भी अलग-अलग आवंटित कर दिए।

रिटेनिंग वॉल में बने छिद्रों को अलग-अलग रंगों से पेंट किया गया है। इन्हीं में अब गौरैया अपना बसेरा बना रही हैं। फोटो | मनुज नामदेव

पेड़ जहां गौरैया दिन में करती हैं बसेरा

नई पीढ़ी को पक्षियों के संरक्षण से भी जोड़ना है : कुलपति

कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने बताया कि भवन निर्माण शैली में बदलाव, घरों से बगीचों की समाप्ति और तेजी से बढ़ते प्रदूषण आदि के कारण गौरैया तेजी से कम हो रही हैं। यहां जब उनके मूवमेंट की जानकारी लगी तो हमने डॉ. गौर के नाम से गौर गौरैया कॉलोनी बनवाई। इसका एक उद्देश्य यह भी है कि गौरैया का संरक्षण तो हो ही, हमारी नई पीढ़ी भी पक्षियों को दाना-पानी रखने की आदत अपनाए और दूसरों को प्रेरित करे। योग विभाग के डॉ. नितिन कोरपाल ने बताया कि विद्यार्थियों की आदत में यह आ गया है कि वे रोजाना दाना-पानी लेकर घर से आते हैं।

विश्वविद्यालय : कुलपति ने गौर गोरैया कॉलोनी का किया लोकार्पण, जरूरी बजट आवंटित करने की भी कही बात

पक्षियों की संख्या हर साल 3% घट रही, पेड़-पौधों की अंधाधुंध कटाई से भी पक्षियों का आशियाना खत्म हो रहा : कुलपति

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की सांस्कृतिक परिषद के तत्वावधान में प्रकृति संरक्षण की दिशा में अभिनव प्रकल्प के तहत महर्षि पतंजलि भवन परिसर की रिटेनिंग वॉल में गोरैया आवास का उद्घाटन मंगलवार को हुआ। विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने कहा मनुष्य अपनी जरूरतों के मुताबिक जंगलों को काटकर अपने रिहायशी इलाकों का विस्तार करता जा रहा है। यदि प्रकृति का इसी तरह दोहन होता रहेगा तो पर्यावरणीय संकट उत्पन्न होते जाएंगे। मनुष्य के अस्तित्व के लिए भी जैव-विविधता का होना जरूरी है। जैव-विविधता रहेगी तो प्रकृति भी बची रहेगी और हम मनुष्य भी बचे रहेंगे। पक्षियों का मानव जीवन के अस्तित्व से गहरा नाता है। हमें उनके संरक्षण और पुनर्वास के लिए भी कदम उठाने चाहिए। उन्होंने एक अध्ययन के आंकड़े प्रस्तुत करते हुए कहा पक्षियों की संख्या तीन प्रतिशत प्रतिवर्ष घटती जा रही है। पेड़-पौधों की अंधाधुंध कटाई से पक्षियों का आशियाना खत्म होता जा रहा है जिससे पारिस्थितिकीय असंतुलन की स्थिति बन रही है और जैव-विविधता घट रही है। गोरैया पक्षी खुशी का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि इन पक्षियों की नियमित निगरानी के साथ इनकी बढ़ती हुई संख्या पर एक अध्ययन भी किया जा सकता है। यह प्रकल्प प्रकृति के प्रति हमारी संवेदनशीलता का सूचक है। विश्वविद्यालय इस दिशा में अन्य अभिनव पहल भी करेगा और एक उचित राशि भी आवंटित की जाएगी। संचालन डॉ. आशुतोष ने किया। इस मौके पर डीएसडब्ल्यू प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा, प्रभारी कुलसचिव डॉ. एसपी उपाध्याय, डोआ प्रो. नवीन कानगो, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. आरटी बेदरे, प्रो बीआई गुरु, डॉ. पंकज तिवारी आदि मौजूद थे।

सागर। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने गौरैया की कॉलोनी का निरीक्षण किया।

फाइन आर्ट के विद्यार्थियों ने सजाई कॉलोनी: डॉ. सोनी

विवि की सांस्कृतिक परिषद के समन्वयक डॉ. राकेश सोनी ने बताया गौर-गौरैया आवसीय परिसर को फाइन आर्ट्स के विद्यार्थियों गगन, जिया, दीपक, सत्यम, नेहा, चंदू, अनन्या, अक्षरा, संस्कार, श्री, पुष्प ने पेंटिंग और चित्रकारी कर सजाया है। कुलपति ने सभी विद्यार्थियों को पुष्प गुच्छ देकर उनकी सराहना भी की। इस दौरान बताया गया कि रिटेनिंग वॉल पर बनाई गई गोरैया की आवासीय कॉलोनी में फिलहाल 18 क्वार्टर आवंटित किए गए हैं। इनमें रहने वाली गोरैया चिड़िया के नाम चिनी, मिनी, किटी, हनी, गोल्डी, जेरू, जैस्मिन, लकी, सिनी, जियां, इशु, कोको, जॉय, नील, शीतल, चीकू, चेरी, सोनी आदि हैं। चीफ वार्डन प्रो. नीलिमा गुप्ता के संरक्षण में डॉ. राकेश सोनी, डॉ. आशुतोष, डॉ. अरुण, डॉ. नितिन कोरपाल और डॉ. बृजेश सहित पांच वार्डन भी बनाए गए हैं जो इन पक्षियों की देख-भाल करेंगे।

सोच, लगन व जूनून से ही लक्ष्य हासिल किए जाते हैं : प्रो. प्रकाश एस. बिसेन

विवि में आयोजन ● केन्द्रीय विश्वविद्यालय स्थापना दिवस पर विशेष व्याख्यान आयोजित

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। केन्द्रीय विश्वविद्यालय स्थापना दिवस अवसर पर विश्वविद्यालय के अभिमंच सभागार में सोमवार को दोपहर 12 बजे से विशेष व्याख्यान का आयोजन किया गया। आयोजन के मुख्य अतिथि जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर के निवर्तमान कुलपति प्रो. प्रकाश एस. बिसेन थे। उन्होंने 'फंक्शनल फूडस इन ह्यूमन हेल्थ' पर व्याख्यान दिया।

प्रो. प्रकाश एस बिसेन ने कहा कि अपनी गाढ़ी कमाई से डा. गौर द्वारा स्थापित इस विश्वविद्यालय में आकर वे गौरवान्वित हैं। मेरे कैरियर और उत्थान में इस विवि का अहम योगदान है। उन्होंने सभी को मानव स्वास्थ्य के लिए कार्यात्मक भोजन के बारे में गहराई से बताया। पेड़-पौधों के भीतर होने वाली कई रासायनिक क्रिया-प्रक्रियाओं के जरिए उन्होंने वातावरणीय प्रभावों का जिक्र जिनमें पौधों के भीतर कंपाउंड बनते हैं। उन्होंने स्वास्थ्य के प्रति सचेत करते हुए लोगों को बताया कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने आस-पास के मौसम के अनुसार प्रयुक्त किए जा रहे फल और सब्जियों को ग्रहण करना चाहिए। उन्होंने विद्यार्थियों से संवाद करते हुए कहा कि अपनी डिग्री में ज्यादा अंकों के पीछे भागने से अच्छा है कि आप अपनी काबिलियत को बढ़ाओ। जरूरी नहीं कि आपके अंक कम हैं तो आप कुछ नहीं कर सकते। उन्होंने कहा कि सोच, लगन और जूनून से ही लक्ष्य हासिल किए जाते हैं।

कैंद्रीय विवि के स्थापना दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

विवि को आगे बढाने में अपना योगदान दें

अध्यक्षता करते हुए प्रभारी कुलपति प्रो. पीके कठल ने कहा कि यह विवि केन्द्रीय विवि के रूप में अपग्रेड होने के बाद अब युवावस्था में पहुंच रहा है। यह अवस्था जिम्मेदारियों का एहसास कराती है। सभी विद्यार्थियों, शिक्षकों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए यह गौरव की बात है कि उन्हें यहां पढ़ने और कार्य करने का अवसर मिला है। हम सबकी जिम्मेदारी है हम सभी विचारवान तरीके से विवि को आगे बढाने में अपना योगदान दें और विवि को नई ऊंचाइयों पर ले जाएं। प्रो. नवीन कानगो ने स्वागत वक्तव्य दिया एवं प्रो. यू के पाटिल ने मुख्य अतिथि का परिचय दिया। कार्यक्रम का संचालन डा. सुनीत वालिया ने किया और आभार प्रो.श्वेता यादव ने ज्ञापित किया। इस अवसर पर विवि के प्रो. पीके खरे, प्रो. आशीष वर्मा, प्रो. जी एल पुणताम्बेकर, प्रो. अजीत जायसवाल, प्रो. अनुपम शर्मा, प्रभारी कुलसचिव डा. एसपी उपाध्याय, उपकुलसचिव सतीश कुमार उपस्थित रहे।

गणतंत्र दिवस परेड में करेंगे सहभागिता

सागर. डॉ. हरि सिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के छह सीनियर डिवीजन के एनसीसी कैडेट्स 26 जनवरी को नई दिल्ली में होने वाली 75वें गणतंत्र दिवस परेड में प्रतिभागिता करेंगें। इसमें सागर एनसीसी ग्रुप के ग्रुप कमांडर ब्रिगेडियर अशोक मनोचा के निर्देशन में विवि के छह सीनियर डिवीजन के एनसीसी कैडेट्स अंडर ऑफिसर शिभान्शु चौबे, सार्जेंट मृत्युंजय सिंह गौर, सीएसएम कारन रजक, कार्पोरल प्रभाष कुमार ओझा, कैडेट आदित्य बमदेले बसोर व कैडेट सुभांशु कुमार पटेल शामिल हैं। 3-एमपी सिग्नल कंपनी एनसीसी इकाई के कंपनी कमांडर लेफ्टिनेंट डॉ. धर्मेन्द्र कुमार सराफ ने बताया कि पहली बार विश्वविद्यालय से इतने कैडेट्स गणतंत्र दिवस शिविर के लिए मध्य प्रदेश व छत्तीसगढ एनसीसी निदेशालय के लिए चयनित किए गए हैं। जिसमें कमान अधिकारी कर्नल अरुण बेंसला के मार्गदर्शन, लेफ्टिनेंस डॉ. गौतम प्रसाद और स्टाफ के सहयोग से प्राप्त हुई है।

पत्रकार विषम परिस्थितियों में भी समाज को सूचनाएं एवं विचार प्रदान करता है : डॉ. झा

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के संचार एवं पत्रकारिता विभाग में संवाद कार्यक्रम हुआ। नवनियुक्त विभागाध्यक्ष डॉ. कालीनाथ झा ने विद्यार्थियों का परिचय प्राप्त करते हुए विभागीय कार्य और शिक्षण पर परिचर्चा की। उन्होंने विद्यार्थियों को शैक्षणिक उन्नति की सीख देते हुए कहा पत्रकारिता के विद्यार्थियों को हमेशा समाज के मध्य रहकर अपने कार्य का दायरा बढ़ाना चाहिए। छात्रों को हमेशा आधुनिक ज्ञान से परिचित रहकर कार्य करना चाहिए। उन्होंने कहा कि जैसे समाजशास्त्र का विद्यार्थी समाज का अध्ययन करता है उसी प्रकार एक पत्रकार विषम परिस्थितियों में भी समाज को सूचनाएं एवं विचार प्रदान करता है।

आज के परिदृश्य में महिला पत्रकार भी बराबरी की संख्या में हैं और युद्ध जैसी विषम परिस्थिति में भी संवाददाता की भूमिका निभाती हैं। यह बदलते समय का सूचक है। पत्रकारिता का परिदृश्य ऑनलाइन संसाधनों के आगमन के साथ बदल रहा है। विद्यार्थियों को अपने काम का स्वयं प्रचार प्रसार करना भी आना चाहिए तभी पत्रकार के रूप में आमजन के बीच उनकी छवि निर्मित होती है। उन्होंने विद्यार्थियों को नियमित पुस्तकें पढ़ने की सलाह दी और वरिष्ठजनों की संगति में रहने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कहा समाज के वरिष्ठ नागरिक एक पुस्तकालय के समान होते हैं जिनके पास अपने समय की हजारों अनकही कहानियां और अनुभव होते हैं। एक पत्रकार के रूप में उन अनुभवों और ज्ञान का उपयोग अपनी अंतर्वस्तु के लिए किया जा सकता है। स्वागत भाषण में डॉ. अलीम अहमद खान ने कहा डॉ. झा की विषय विशेषज्ञता का लाभ विभाग एवं छात्रों को मिलेगा। डॉ. विवेक जायसवाल ने विभाग में संचालित पाठ्यक्रमों की जानकारी दी। उन्होंने विभाग में कम्युनिटी रेडियो, नए भवन और अन्य कार्यों की प्रगति की जानकारी भी दी।

रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का सजीव प्रसारण हुआ, विद्यार्थियों ने लगाई झांकी

सागर @ पत्रिका. डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय सागर के अभिमंच सभागार में अयोध्या में आयोजित श्री राम लला प्राण प्रतिष्ठा का सजीव प्रसारण किया गया। कार्यक्रम के पूर्व मुख्य अतिथि शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुलभाई कोठारी, कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, मप्र हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के संचालक अशोक कड़ेल, स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय सागर के कुलाधिपति डॉ. अजय तिवारी, डॉ. देशराज शर्मा, राष्ट्रीय संयोजक शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, न्यास के राष्ट्रीय प्रवासी कार्यकर्ता व कोषाध्यक्ष सुरेश गुप्ता ने श्रीराम चरण पादुका पर पुष्प अर्पित किए। इस दौरान उपस्थित समस्तजन ने प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के दौरान मंगलगान किया। रामलला की आरती गायन में सहभागिता की। विद्यार्थियों ने जोश के साथ जय घोष भी किया। प्राण-प्रतिष्ठा उपरान्त प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का भाषण सुना। अयोध्या में भगवान रामलला की प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के साथ केंद्रीय विश्वविद्यालय के नाट्यकला के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक परिषद् के समन्वयक डॉ. राकेश सोनी के निर्देशन में राम दरबार की झांकी प्रस्तुत की।

विवि के विद्यार्थियों ने दी राम दरबार की प्रस्तुति

विवि में आयोजित कार्यक्रम के दौरान श्रीराम दरबार की झांकी प्रस्तुत की गई।

डा. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के नाट्यकला के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक परिषद् के समन्वयक डा. राकेश सोनी के निर्देशन में राम दरबार की झांकी प्रस्तुत की।

विवि के अभिमंच सभागार में अयोध्या में आयोजित श्री राम लला प्राण प्रतिष्ठा का सीधा प्रसारण किया गया। कार्यक्रम के पूर्व मुख्य अतिथि शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव डा. अतुल भाई कोठारी, कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, मप्र हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के संचालक अशोक कड़ेल, स्वामी विवेकानंद विवि के कुलाधिपति डा. अजय तिवारी मौजूद थे।

आइटी कंपनियों में प्लेसमेंट के विभिन्न चरणों की दी जानकारी

कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। • नवदुनिया

सागर(नवदुनिया प्रतिनिधि)। कंप्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग के विद्यार्थियों के लिए 23 एवं 24 जनवरी को कम्प्यूटर विज्ञान एवं अनुप्रयोग विभाग में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्रथम दिवस उद्घाटन सत्र में एप्लाइड ज्योलाजी विभाग के सीनियर प्रोफेसर प्रो. एच थाम्सस मुख्य अतिथि थे, जिन्होंने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम की शुरूआत की। कार्यवाहक विभागाध्यक्ष प्रो. रणवीर कुमार ने अपने विचार रखे। डा. अभिषेक बंसल द्वारा उद्घाटन सत्र में धन्यवाद ज्ञापित किया गया। विभिन्न प्रतियोगिताएं हुई। इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को आइटी कंपनियों द्वारा प्लेसमेंट की प्रक्रिया में आयोजित विभिन्न चरणों से अवगत कराना था। इस आयोजन को सफल बनाने में विभाग के शिक्षक डा. अभिषेक बंसल, डा. रंजीत रजक, कमलकान्त अहिरवार, गौरव जैन, प्रशान्त कुमार नामदेव, रिचा पाठक, सतीश चौरसिया मौजूद थी।

गौर समाधि पर मनाया उत्सव

सागर @ पत्रिका. अयोध्या में भगवान श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा होने के बाद डॉ. हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय परिवार ने सोमवार की शाम गौर समाधि पर पहुंचकर उत्सव मनाया। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के नेतृत्व में विद्यार्थियों, शिक्षकों, अधिकारी-कर्मचारियों ने गौर प्रांगण व गौर समाधि में दीप प्रज्जवलित किए। इसी क्रम में कुलपति ने गौर भवन स्थित शिव मंदिर और परिसर में भी दीप प्रज्जवलित किए।

विद्यार्थियों ने निकाली प्रभातफेरी

सागर @ पत्रिका. अयोध्या में भगवान श्रीराम लला की प्राण प्रतिष्ठा के पूर्व डॉ हरिसिंह गौर केंद्रीय विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने सोमवार की सुबह बॉयल हॉस्टल स्थित मंदिर से प्रभातफेरी निकाली। कीर्तन करते हुए विद्यार्थी हॉस्टल से आर्ट कैंटीन, सेंट्रल ऑफिस, टपरा, साइंस, गौर मूर्ति, गौर समाधि, पुस्तकालय भवन होते हुए टपरा स्थित मंदिर पर पहुंचे और समापन किया। प्रभात फेरी में विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के साथ अधिकारी-कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

विवि... रामलला प्राण-प्रतिष्ठा का प्रसारण हुआ, गौर समाधि और गौर भवन में जलाए गए दीप

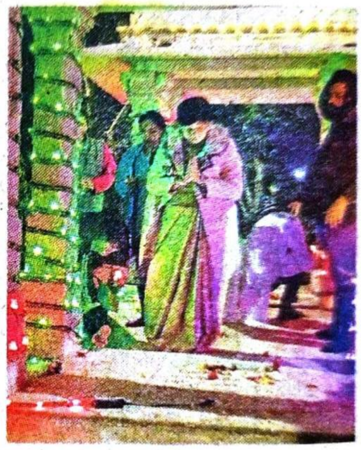

सागर | डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के अभिमंच सभागार में अयोध्या में रामलला प्राण प्रतिष्ठा का प्रसारण किया गया। पूर्व मुख्य अतिथि शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुलभाई कोठारी, विवि की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता, मध्यप्रदेश हिंदी ग्रंथ अकादमी के संचालक अशोक कड़ेल, स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय के कुलाधिपति डॉ. अजय तिवारी, डॉ. देशराज शर्मा, राष्ट्रीय संयोजक शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, न्यास के राष्ट्रीय प्रवासी कार्यकर्ता एवं कोषाध्यक्ष सुरेश गुप्ता ने श्रीराम चरण पादुका पर पुष्पार्पण किया। सभी ने प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के दौरान मंगलगान किया। रामलला की आरती गायन में सहभागिता की। विवि के नाट्यकला के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक परिषद के समन्वयक डॉ. राकेश सोनी के निर्देशन में राम दरबार की झांकी प्रस्तुत की। वहीं शाम को कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के नेतृत्व में गौर समाधि में दीप प्रज्ज्वलन किए।

विवि के 6 एनसीसी कैडेट्स का गणतंत्र दिवस की परेड के लिए चयन, पीएम रैली में सहभागिता करेंगे

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के सीनियर डिवीजन के 6 एनसीसी कैडेट्स नई दिल्ली में 75वें गणतंत्र दिवस की परेड में पीएम रैली में सहभागिता करेंगे। 3 एमपी सिग्नल कंपनी एनसीसी इकाई के कंपनी कमांडर लेफ्टिनेंट डॉ. धर्मेंद्र कुमार सर्राफ ने बताया पहली बार विवि से इतने कैडेट्स गणतंत्र दिवस शिविर के लिए मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ़ एनसीसी निदेशालय के लिए चयनित किए गए हैं। अंडर ऑफिसर शिभांशु चौबे, सार्जेंट मृत्युंजय सिंह गौर, सीएसएम कारन रजक, कार्पोरल प्रभाष कुमार ओझा, कैडेट आदित्य बमदेले तथा कैडेट सुभांशु कुमार पटेल का चयन किया गया है। इसमें कमान अधिकारी कर्नल अरुण बैंसला का मार्गदर्शन, लेफ्टिनेंट डॉ. गौतम प्रसाद और अन्य पीआई स्टाफ का सहयोग रहा। विवि के सीनियर डिविजन एनसीसी कैडेट्स ने यूथ एक्सचेंज प्रोग्राम, पीएम रैली, फ्लैग एरिया, गार्ड ऑफ ऑनर एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे महत्वपूर्ण स्पर्धाओं में प्रतिभागिता कर अपना-अपना स्थान सुनिश्चित किया है। कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता के संरक्षण एवं एनसीसी ग्रुप के कमांडर अशोक मनोचा के निर्देशन में विश्वविद्यालय के सीनियर डिविजन एनसीसी कैडेट्स लगातार उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं।

शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय सागर में 7 एमपी गर्ल्स इकाई के तहत प्रभारी प्राचार्य डॉ. मधु स्थापक के मार्गदर्शन में अग्निवीर चयन संबंधी कार्यक्रम हुआ। स्वामी विवेकानंद कॅरियर मार्गदर्शन योजना के जिला नोडल अधिकारी डॉ. अमर कुमार जैन ने बताया आर्मी चयन कार्यालय ग्वालियर से आए सूबेदार मेजर सुल्तान सिंह ने छात्राओं को अग्निवीर में चयन से जुड़ी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि चयन के लिए छात्राओं की उम्र 17 से 23 वर्ष होनी चाहिए। साथ ही ऐसी छात्राएं जिनकी शैक्षणिक योग्यता 10वीं पास है तथा ऊंचाई 162 सेंटीमीटर है, वे इस योजना के लिए अपना रजिस्ट्रेशन करा सकती हैं। अग्निवीर में चयन के बाद जर्नल ड्यूटी नर्सिंग, तकनीकि, शिक्षक आदि समूहों में पंजीयन किया जाता है। चयन के लिए कैडेट्स की मेडिकल एवं लिखित परीक्षा भी होती है। जो कैडेट्स इन दोनों की मैरिट लिस्ट में आते हैं वे अग्निवीर में चार वर्ष के लिए कार्य करते हैं। इसके बाद इन्हीं में से 25 प्रतिशत का चयन आर्मी में होता है।

आयोजन | **'समय महात्मा- राम से राष्ट्र की संगति' विषय पर व्याख्यान का आयोजन**

भारत राष्ट्र के पुनर्निमाण के प्रेरणास्रोत हैं रामः प्रो. शर्मा

सागर, आचरण संवाददाता।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधीजी के पुण्य स्मरण दिवस के अवसर पर डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर के समाजविज्ञान शिक्षण-अधिगम केंद्र एवं दर्शनशास्त्र विभाग के संयुक्त तत्वावधान में 'समय महात्मा- राम से राष्ट्र की संगति' विषय पर व्याख्यान का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य वक्ता प्राच्यविद एवं प्रख्यात दर्शनशास्त्री प्रो. अम्बिकादत्त शर्मा ने अपने बीज वक्तव्य का प्रारंभ करते हुए कहा कि इस वर्ष गांधीजी की पुण्यतिथि यानि कि 30 जनवरी 2024 का यह दिन अपने साथ कई विलक्षणताएं लेकर आया है। आजादी के अमृत महोत्सव का संपन्न होना, पूरे देश के द्वारा 75 वें गणतंत्र दिवस के तौर पर प्लेटिनम जुबली का मनाया जाना एवं देश के जनमानस द्वारा गाँधी को भूलने के विरुद्ध स्वयं को खड़ा न कर पाना कुछ ऐसी ही विशेषताएं या विलक्षणताएं हैं। आज का यह दिन इसलिए भी विलक्षण है क्योंकि हाल ही में 22 जनवरी को अयोध्या में हुई राम की प्राण प्रतिष्ठा के साथ हिन्दू अस्मिता की भी प्राण प्रतिष्ठा हुई, जिसकी लड़ाई विगत पांच सौ वर्षों से लड़ी जा रही थी। और इस सु-अवसर पर प्रधानमंत्री ने 'देव से देश तक और राम से राष्ट्र तक' का आह्वान करते हुए कहा कि आगामी एक हजार वर्षों तक भारत राष्ट्र के पुनर्निर्माण के प्रेरणास्त्रोत राम बनेगे। ये घटनाएं इस तीस जनवरी को केवल कालक्रम की दृष्टि से ही विशेष नहीं बनातीं बल्कि ये घटनाएं इस युवा देश को गंभीर विचार के लिए प्रस्थान बिंदु भी देतीं हैं। सवाल आता है कि 30 जनवरी 1948 को गाँधी जी 'हे राम' के अंतर्नाद के साथ हमलोगों से विदा क्यों हुए? इस संदर्भ में उन्होंने हे राम शब्द के तीन अर्थों में प्रयोग पर चर्चा करते हुए बताया कि हे राम शब्द का इस्तेमाल एक तो किसी हृदय विरादक दृश्य को देखकर हतत्प्रद हो जाने की स्थिति में किया जाता है, दूसरा कोई गलती हो जाने पर अक्सर इस शब्द का उपयोग किया जाता है यहाँ यह जानना भी महत्वपूर्ण है इन दोनों ही स्थितियों में से गाँधी का सम्बन्ध किसी से भी नहीं था। उनके द्वारा हे राम का अंतर्नाद एक अलग किस्म की स्थिति का परिचायक है उन्होंने भारत के भविष्य को राम से जोड़ते हुए या यूं कहें कि राम के भरोसे छोड़ने के संदर्भ में इस हे राम अंतर्नोद का इस्तेमाल किया और भारत की आजादी के आन्दोलन में उन्होंने राम को अपना आइकन बनाया। क्योंकि उनके अनुसार भारतीय संस्कृति और भारतीय सभ्यता का जितना प्रतिनिधितव राम करते हैं उतना कोई और नहीं कर सकता था। इसलिए राम भारतीयता के पर्याय हैं वे भारतीय संस्कृति और सभ्यता के आदर्शभूत हैं। इसलिए प्रधानमंत्री जी ने भी आगामी 1000 वर्षों तक भारतीय राष्ट्र के पुनर्निर्माण के एक मात्र प्रेरणा स्त्रोत के तौर पर राम को ही रेखांकित किया।

इस संदर्भ में उन्होंने आगे बताया कि राम सत्य, अहिंसा, धैर्य, शीलता आदि मूल्यों के प्रतीक हैं और ठीक वैसे ही गाँधी भी इन्हीं मूल्यों के पक्षधर हैं। इस संदर्भ में ही हमें राम से गाँधी की संगति और गाँधी से राष्ट्र की संगति को समझना होगा। क्योंकि राम और गाँधी इन दोनों के उद्देश्यों, उनकी प्राप्ति हेतु अपनाई गई कार्य प्रणाली और मूल्यों में निसंदेह एक संगति थी। अंत में प्रो. शर्मा ने अपने वक्तव्य को सार रूप में समेटते हुए कहा कि हमारे राष्ट्र पिता को तो देश के आजाद होते ही हमारे बीच से अनुपस्थित कर दिया गया लेकिन हमें इस बात पर विचार करना होगा कि आजादी के बाद दस वर्षों तक भी अगर वे होते तो देश के विकास की दिशा क्या होती, वे उसके लिए कौन सा रास्ता निकालते?

कार्यक्रम में, चीफ प्रॉक्टर डॉ. चंदा बेन, डॉ अनिल तिवारी, डॉ कालीनाथ झा, समाज विज्ञान शिक्षण-अधिगम केंद्र के समन्वयक डॉ. संजय शर्मा, मीडिया अधिकारी डॉ. विवेक जायसवाल, डॉ. आशुतोष मिश्र, विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षक, शोधार्थी एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

मध्यक्षेत्र कुलपति समागम में अनुसंधान व अभिनव विकास योजनाओं पर हुआ मंथन

भारतीय शिक्षा संस्थाओं में भी विदेशी संस्थानों की तर्ज पर विकसित की जा रहीं प्रयोगशालाएं

सागर (नवदुनिया प्रतिनिधि)। डाक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता ने गुरु घासीदास विश्वविद्यालय बिलासपुर में भारतीय विवि संघ मध्य क्षेत्र के कुलपतियों की वार्षिक बैठक में शामिल होकर महत्तपूर्ण सुझाव दिए। आयोजन की थीम अनुसंधान का पोषण और नवाचार पारिस्थिति के लिए नवीन वित्त पोषण माडल पर उन्होंने अपना वक्तव्य दिया।

कुलपति समागम में अनुसंधान व अभिनव विकास योजनाओं पर चर्चा हुई। • नवदुनिया

प्रो. गुप्ता ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि वैश्विक परिदृश्य में अनुसंधान के लिए किसी भी शैक्षणिक संस्थान में केन्द्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला एक महत्वपूर्ण सह इकाई के रूप में है। शोधार्थियों के लिए अनुसंधान में रूचि रखने वाले एवं पठन-पाठन से जुड़े हुए शिक्षाविदों, शिक्षकों के लिए भी महत्वपूर्ण इकाई होती है।

भारतीय संस्थानों में भी विदेशी संस्थानों की तर्ज पर केन्द्रीय अनुसंधान प्रयोगशालाएं विकसित की जा रही हैं। इन प्रयोगशालाओं में अत्याधुनिक विश्लेषणात्मक और उच्च गुणवत्ता वाले उपकरण जो एक समय अनुपलब्ध थे वे सहज उपलब्ध हैं एवं शोधार्थी एक ही स्थान पर इन उपकरणों के माध्यम से अपने शोध कार्य को संपन्न कर रहे हैं।

समुचित निर्णय लेने के लिए सहयोगात्मक अनुसंधान करना चाहिए: प्रो. गुप्ता ने कहा कि शोधकर्ताओं को जटिल समस्याओं को हल करने और समुचित निर्णय लेने के लिए सहयोगात्मक अनुसंधान करना चाहिए।

यह ऐसी कुंजी है जिसमें छात्र अपने विचारों का विनिमय कर अनुसंधान को बढ़ा सकते हैं। इसके परिणाम बहुत उत्कृष्ट रहे हैं।

उन्होंने कहा कि शैक्षणिक संस्थान पुरा छात्रों एवं शिक्षकों से सहयोग प्राप्त कर अपने शोध को बढ़ा सकते हैं। हमारे शैक्षणिक संस्थानों के पूर्व छात्र अपने-अपने विषयों में शोध कार्य पूर्ण कर देश-विदेश के विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों में कार्य कर रहे हैं।

शैक्षणिक संस्थान पुरा छात्रों और शिक्षकों के सहयोग से अपना शोध बढ़ा सकते हैं : कुलपति

भास्कर संवाददाता | सागर

डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय की कुलपति प्रो. नीलिमा गुप्ता भारतीय विश्वविद्यालय संघ, मध्यक्षेत्र के कुलपतियों की वार्षिक बैठक में शामिल हुईं। बैठक गुरु घासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर में हुई। प्रो. गुप्ता ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा वैश्विक परिदृश्य में अनुसंधान के लिए किसी भी शैक्षणिक संस्थान में केंद्रीय अनुसंधान प्रयोगशाला एक महत्वपूर्ण सह इकाई के रूप में न केवल शोधार्थियों के लिए बल्कि अनुसंधान में रुचि रखने वाले एवं पठन-पाठन से जुड़े हुए शिक्षाविदों, शिक्षकों के लिए भी महत्वपूर्ण इकाई होती है।

आज भारतीय संस्थानों में भी विदेशी संस्थानों की तर्ज पर केंद्रीय अनुसंधान प्रयोगशालाएं विकसित की जा रही हैं। इन प्रयोगशालाओं में अत्याधुनिक विश्लेषणात्मक और उच्च गुणवत्ता वाले उपकरण जो एक समय अनुपलब्ध थे वे सहज उपलब्ध हैं। शोधार्थी एक ही स्थान पर इन उपकरणों के माध्यम से अपने शोध कार्य को संपन्न कर रहे हैं। उन्होंने कहा उच्च शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार एवं विश्वविद्यालय अनुदान आयोग नई दिल्ली का यह उद्देश्य रहा है कि शिक्षा के क्षेत्र में ऐसी संस्थाओं को विकसित किया जाए। उन्हें पर्याप्त अनुदान प्रदान किया जाए जिससे ये शैक्षणिक संस्थान शोधार्थियों को उनके शोध में आने वाली समस्याओं, दुर्लभ पाठ्य सामग्रियों एवं अनुसंधान आनुषांगिक सामग्रियों के लिए न केवल परामर्श देने की भूमिका में रहें बल्कि इसके लिए पर्याप्त रूप से परामर्श के साथ-साथ शैक्षणिक एवं अनुसंधानात्मक सहयोग भी प्रदान करें। ज्ञान के विकास में आने वाली बाधाओं को दूर कर शोध के लिए एक नई दिशा निर्धारित करें। कौशल का विकास, प्रक्रिया का विश्लेषण, रणनीति विकास जैसी सेवाएं भी परामर्श केन्द्र प्रदान करें। प्रो. गुप्ता ने कहा शोधकर्ताओं को जटिल समस्याओं को हल करने और समुचित निर्णय लेने के लिए सहयोगात्मक अनुसंधान करना चाहिए। यह ऐसी कुंजी है जिसमें छात्र अपने विचारों का विनिमय कर अनुसंधान को बढ़ा सकते हैं। इसके परिणाम बहुत उत्कृष्ट रहे हैं। शैक्षणिक संस्थान पुरा छात्रों एवं शिक्षकों से सहयोग प्राप्त कर अपने शोध को बढ़ा सकते हैं। हमारे शैक्षणिक संस्थानों के पूर्व छात्र अपने-अपने विषयों में शोध कार्य पूर्ण कर देश-विदेश के विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों में कार्य कर रहे हैं।

संस्थानों में कार्य करने वाले ऐसे पूर्व विद्यार्थियों का एक सहज एवं भावनात्मक संबंध अपने-अपने संस्थानों से बना रहता है। इनके सहयोग से शोध को बढ़ा सकते हैं एवं शैक्षणिक संस्थानों में वित्तीय भार को कम किया जा सकता है। एलुमिनी एसोसिएशन इस कार्य को बेहतर तरीके से कर सकता है और अपने पूर्व छात्रों के साथ-साथ वर्तमान छात्रों के बीच एक परामर्श इकाई के रूप में कार्य कर शोध कार्यों में सहयोग प्रदान कर सकता है।

डॉक्टर हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर
संस्थापक डॉ. हरीसिंह गौर
असतो मा सद्गमय